ओ३म्

परिवार और समाज के नवनिर्माण का साहित्यिक मासिक

शांतिधर्मी

मार्च–2019

जीन्द, शांतिधर्मी परिसर में आयोजित नवशस्येष्टि पर्व की झलकियाँ

प्रकाशन का 21वां वर्ष

₹10

शांतिधर्मी के विशिष्ठ सहयोगी

आप हैं राष्ट्र वन्दना मिशन के जिला संयोजक श्री देवेन्द्र कुमार आर्य एडवोकेट आर्य भवन बागपत (उ०प्र०)। श्री आर्य विभिन्न सामाजिक, धार्मिक एवं राजनैतिक गतिविधियों से जुड़े हुए हैं। प्रख्यात आर्य भजनोपदेशक महाशय श्रीपाल आर्य खेड़ा हटाना बागपत के सुपुत्र हैं। आर्यसमाज और ऋषि दयानन्द के सिद्धांतों के प्रचार-प्रसार में गहरी अभिरुचि है। आपने आर्यसमाज बागपत के मन्त्री सहित विभिन्न पदों पर रहते हुए ऐतिहासिक विशाल आर्य सम्मेलन कराये। सामाजिक कार्यों में भी आप विशेष रूचि रखते हैं। शिष्ट, सौम्य, शालीनता आपका नैसर्गिक गुण है। एक अच्छा वक्ता होने के कारण प्रत्येक सभा में आप विशिष्ट स्थान पाते हैं । बागपत जिला न्यायालय में आप वरिष्ठ अधिवक्ता के रूप में विगत २५वर्षों से विधिक कार्य कर रहे हैं । आप यज्ञ करने और कराने में विशेष महारथ रखते हैं ।

आप है श्री जसपाल सिंह राणा एडवोकेट, आर्य नगर, मेरठ रोड, बागपत उ०प्र०। आपको आर्यसमाज और ऋषि दयानन्द की घुट्टी जन्म में ही मिली है। सामाजिक कार्यों में आप बढ़-चढ़ कर दान देते हैं। दीन हीन की मदद तथा गो सेवा में आर्थिक सहयोग करने में सदैव अग्रणी भूमिका निभाते हैं। आपके दादाजी स्व० श्री सूरत सिंह जी क्षेत्र के प्रख्यात आर्य समाजी थे। फलस्वरूप आपके पिता श्री करतार सिंह आर्य भी दादा जी के अनुव्रती हैं। विगत ६०वर्षों से परिवार में दैनिक यज्ञ करने का गौरव प्राप्त है। सादगी, सरलता व विनम्रता आपका आभूषण है। वर्तमान में आप आर्यसमाज अग्रवाल मण्डी टटीरी के प्रशासक हैं। आप मनसा वाचा-कर्मणा के सिद्धांत को पूर्ण रूपेण अंगीकृत किये हुए हैं। आप दृढ़ आर्य समाजी होने के साथ-साथ एक सफल अधिवक्ता हैं।

आर्य समाज जीन्द जंक्शन में महर्षि दयानन्द जयन्ती समारोह; आचार्य आत्मप्रकाश जी, विनिता गुलाटी, सुनील शास्त्री व ईश्वर आर्य प्रधान वेद प्रचार मण्डल का सम्बोधन; श्रीमती सुमन मान को सम्मानित करते हुए स्वामी रामेश्वरानन्द जी।

संस्थापक एवं आद्य सम्पादक

पं० चन्द्रभानु आर्य

सम्पादक : **सहदेव समर्पित**
(चलभाष **09416253826**)
उपसम्पादक : **सत्यसुधा शास्त्री**
प्रबंध संपादक : **सुभाष श्योराण**
आदरी सम्पादक : **यज्ञदत्त आर्य**
सह-सम्पादक : **राजेशार्य आट्टा**
डॉ० विवेक आर्य
विधि परामर्शक : **डॉ० नरेश सिहाग एडवोकेट**
सहयोग : **आचार्य आनन्द पुरुषार्थी**
श्रीपाल आर्य, बागपत
महेश सोनी, बीकानेर
भलेराम आर्य, सांधी
कर्मवीर आर्य, रेवाड़ी
कार्यालय व्यवस्थापक: **रविन्द्रकुमार आर्य**
कम्प्यूटर सज्जा : **बिशम्बर तिवारी**

सहयोग राशि

एक प्रति	:	१०.०० रु.
वार्षिक	:	१२०.०० रु.
दस वर्ष	:	१०००.०० रु.

ओ३म्

शं नो मित्रः शं वरुणः शं नो भवत्वर्यमा।

परिवार और समाज के नवनिर्माण का मासिक

शांतिधर्मी

मार्च, २०१६ ई०

वर्ष : २१ अंक : २ ~~फाल्गुन~~ २०७५ विक्रमी
स ष्टि संवत्-१६६०८५३११६, दयानन्दाब्द : १६५

आलेख

सामवेद अनुशीलन (आधार-आधेय) ६
माता-पिता अपने दायित्त्व को पहचानें (पुनर्प्रकाशन शांतिप्रवाह) ७
विश्व गुरु भारत (राष्ट्र-चिन्तन) ६
शिक्षा पर भारी परीक्षा (विमर्श) १०
आर्यों के मांसाहार की वास्तविकता ११
भगतसिंह : धर्म और ईश्वर (व्यक्तित्व) १२
आर्यों के देशान्तरण का मनघडन्त सिद्धान्त १४
बीस मिनट का हवन : पूरे दिन का सुरक्षा कवच १६
आर्य सम्राट् मिहिर भोज (इतिहास कथा) १७
अमर शहीद दीवान सिंह भनवाला (श्रद्धांजली) १६
ब्रह्मचारी लोकानू पिपर्ति (वेद स्वाध्याय) २०
चित्त की वृत्तियाँ और साधना में बाधाएँ (योग) २२
डिप्रेसन और आयुर्वेद-२ (स्वास्थ्य चर्चा) २४
कविता : ५, ८, १६, २६

स्तम्भ : बाल वाटिका-२६, प्रेरक प्रसंग : बड़ा कौन, दिशाओं को प्रणाम, देश का सम्मान-२७, भजनावली-२८, बिन्दु बिन्दु विचार-३४

साथ में : आन्तरिक और बाह्य शुद्धि, समाचार/सूचनायें

कार्यालय :

सम्पादक शांतिधर्मी, **पो बाक्स नं० 19**
मुख्य डाकघर जींद 126102
७५६/३, आदर्श नगर, सुभाष चौक, जीन्द-१२६१०२ (हरि०)
दूरभाष : ६४१६२-५३८२६
ईमेल- **shantidharmijind@gmail.com**

पूर्ण सम्पादक मण्डल अवैतनिक है। पत्रिका में व्यक्त लेखकों के विचारों से सम्पादक मण्डल का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। किसी भी प्रकार के विवाद का न्याय क्षेत्र जीन्द होगा।

योग व भोग

❑सहदेव समर्पित

मनुष्य जन्म को पाकर कोई दु:खी नहीं रहना चाहता। मनुष्य ही क्या कोई भी प्राणी दु:ख नहीं चाहता। लेकिन अन्य प्राणियों की सुख की इच्छा का एक सीमित क्षेत्र होता है। वे अपनी तात्कालीन आवश्यकताओं, इच्छाओं की पूर्त्ति को ही सुख मानते हैं और उन्हीं की प्राप्ति के लिए प्रयत्नशील रहते हैं। वे अपना पेट भरकर संतुष्ट हो जाते हैं और सुख की नींद सोते हैं। इस उपलब्धि पर मनुष्य शायद ही कभी संतुष्ट होता है। वह पेट भरकर भी असंतुष्ट रहता है। घर बनाकर भी, बैंक बैलेंस बढ़ाकर भी। इसलिए जितने भी दर्शन शास्त्र हैं वे इसी क्षेत्र में विचार करते हैं कि मनुष्य सुखी कैसे हो।

भारतीय दर्शन ने इस पर गहन विचार किया है। यह जीवात्मा जिसे मनुष्य शरीर मिला है, अपनी स्थिति पर विचार करे। जीव के अतिरिक्त इस संसार में एक परमात्मा है – एक प्रकृति है। परमात्मा के संबंध में उसे क्या करना है और प्रकृति के संबंध में उसे क्या करना है, यही प्रश्न है। प्रकृति से हमारा इतना संबंध है कि हमारा यह शरीर प्रकृति से बना है और प्रकृति से ही इसका पालन पोषण होता है। प्रकृति मिथ्या नहीं है। प्रकृति जड़ अवश्य है पर इसके संबंध का कहीं निषेध नहीं किया गया है। प्रकृति बंधन का कारण नहीं है, बंधन का कारण तो हमारी सोच है। जो वस्तु जैसी है उसको वैसी न समझना-- अविद्या इसी का नाम है। अनित्य को नित्य, अपवित्र को पवित्र, अनात्मा को आत्मा समझना। प्रकृति से संबंध का नाम भोग है और परमात्मा से संबंध का नाम योग है। भोग का अर्थ प्रकृति की सहायता प्राप्त करना है न कि प्रकृति का दास बन जाना। भोग प्रकृति से ही हो सकता है, परमात्मा से नहीं और योग परमात्मा से ही हो सकता है, प्रकृति से नहीं। योग का अर्थ जुड़ना है और यह जुड़ना अपने जैसे (चेतन) से ही हो सकता है, न कि जड़ प्रकृति से। जुड़ना वही हो सकता है जब दोनों जुड़ सकते हों। ईश्वर ही योग करने के योग्य है प्रकृति नहीं क्योंकि प्रकृति से हमारा शाश्वत संबंध नहीं।

भोग से मना नहीं किया गया है। वेद का स्पष्ट आदेश है-'भुंजीथा' इसका अर्थ है भोग करो। लेकिन भोग कैसे करो? इसका उत्तर इसके पूर्व शब्द में है 'त्यक्तेन भुंजीथा' त्याग के भाव से भोग करो। वेद का उपदेश है कि जो तुम्हें भोग करने के लिए मिला है, वह तुम्हारा नहीं है। जब तुम इस बात का निश्चय करके भोग करोगे तो उसमें लिप्त नहीं होओगे। भोग करने की विधि यही है कि उसमें लिप्त न होना। भोग्य पदार्थ को अपना समझने से उसमें मोह पैदा हो जाता है उसको सर्वदा प्राप्त करने की इच्छा पैदा होती है जबकि उसका स्वभाव है कि वह सदा प्राप्त नहीं रह सकता। उसके प्राप्त न होने से क्रोध पैदा हो जाता है। इस प्रकार बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है। इसका बड़ा सुन्दर वर्णन गीता में दिया गया है कि भोग्य पदार्थ के यथार्थ को न समझकर भोग करने से वह विनाश का कारण बनता है, क्योंकि वह वृत्तियों को बिगाड़ देता है। सारा खेल वृत्तियों का ही है। योग है ही वृत्तियों का निरोध करना। इसलिए भोग की शर्त यह है कि वह वृत्तियों को बिगाड़ने वाला न हो। जितने भी स्वाध्याय, सत्संग, जप आदि कार्य हैं वे वृत्तियों को बिगड़ने से बचाने और उन्हें सही मार्ग पर लगाने के लिए ही तो किये जाते हैं। योग में तो दोनों प्रकार की वृत्तियों का निरोध करना होता है- क्लिष्ट और अक्लिष्ट। उचित प्रकार से और सही सोच के साथ भोग करने से भोग योग में बाधक नहीं बनता है।

भोग का भाव है सब प्रकार की सांसारिक उन्नति। जो भोग करते समय स्वाभाविक और सच्चे मित्र ईश्वर का ध्यान रहेगा तो भोग अमर्यादित हो ही नहीं सकता। आज मनुष्य के दु:खों को कारण यही है कि उसने न तो प्रकृति को समझा और न परमात्मा को। भौतिक पदार्थों ईंटों पत्थरों मजारों से मन्नतें मांग रहे हैं और सर्वशक्तिमान् परमात्मा को नहला धुलाकर नए कपड़े पहनाकर चादर चढ़ाकर प्रसन्न करना चाहते हैं। मन्दिर मस्जिद गुरुद्वारे के आगे से होकर निकले तो सिर झुका लिया और बाद में उसको अंधा समझकर पाप कर्मों में लिप्त रहे। घर बनाने की चिन्ता तो है, मन बनाने की चिन्ता नहीं है। मनुष्य अपने लिए स्वयं समस्याएँ पैदा करता है और उनको सुलझाते सुलझाते उलझता ही चला जाता है। संसार के भोगों में सदा सुख देखने वाले स्वयं ही भोगों का 'भोग' हमारे देखते देखते देखते हो जाते हैं। भोग स्वयं उन्हें ही खा जाते हैं, पर फिर भी उनकी तृप्ति नहीं होती। तो क्यों न यह बात पहले ही समझ ली जाए कि भोग हमारे जीवन का ध्येय नहीं हैं। सब प्रकार की सांसारिक उन्नति करते हुए मोक्ष प्राप्त करना-- सुनने में यह बात चाहे अद्‌भुत लगे लेकिन इसी का नाम धर्म है।- 'यतोऽभ्युदय नि:श्रेयस् सिद्धि स धर्म:।' आज मनुष्य के दु:खों का कारण यही है कि वह सच्चे धर्म का पालन नहीं करता।

प्रकाशन का २१ वां वर्ष : सभी पाठकों सहयोगियों का हृदय से आभार!

आपकी सम्मतियाँ

फरवरी अंक मिल गया, धन्यवाद! यह सर्वश्रेष्ठ पत्रिका है। बच्चों से लेकर बड़ों तक इसमें सभी के लिये उपयोगी, ज्ञानवर्धक और संस्कारप्रद सामग्री प्रकाशित होती है। बच्चों तक में इसके प्रति उत्सुकता रहती है और वे इसे सबसे पहले पढ़ना चाहते हैं। यह उत्तम ज्ञानयज्ञ है। मैं आपको इस श्रेष्ठ कार्य के लिए साधुवाद देता हूँ।

वजीर सिंह
रामकला एण्ड सन्स, काठमण्डी रोहतक-124001

✉

शांतिधर्मी निस्सन्देह अपेक्षित ऊँचाईयों को छू रहा है। मन शांति, जग शांति और वैदिक धर्म, शुद्ध धर्म के प्रचार प्रसार में आपके पत्र का विशेष योगदान बन रहा है। वस्तुतः सम्पादक मण्डल इसके लिए बधाई का पात्र है। ईश्वरकृपा से यह मंगलकार्य होता रहे, चलता रहे; शुभ कामनाओं के साथ।

बंशीलाल चावला
बहादुरगढ़, जिला झज्जर

✉

मान्य समर्पित जी, सादर नमस्ते। आपका किन शब्दों में आभार व्यक्त करूँ, मेरे पास शब्द नहीं हैं। आपका बारम्बार आभार व्यक्त करता हूँ। आपका उच्च व्यक्तित्त्व किसी प्रशंसा या चाटुकारिता का मोहताज नहीं है। महोदय, मैं अपने को रोक नहीं पा रहा हूँ। आप जैसे उच्च व्यक्तित्त्व के स्वामी विरले होते हैं। हम आपके प्रशंसक हैं। आप समाज में जाग्रति लाने के लिए सतत् प्रयास कर रहे हैं। हमारी हार्दिक शुभकामनाएं आपके साथ हैं।

देवेन्द्र कुमार आर्य एडवोकेट
जिला संयोजक राष्ट्र वन्दना मिशन
आर्य भवन, नई बस्ती बागपत २५०६०९

✉

हमें बाल वाटिका सबसे अच्छी लगती है। और भी महापुरुषों के बारे में जानने को मिलता है। फरवरी के अंक में देशभक्त बालक हेमू कालानी के बारे में नई जानकारी मिली। हास्यम् और पहेलियाँ भी मनोरंजक और ज्ञान बढ़ाने वाली हैं। हम शांतिधर्मी को बाबाजी से पहले पढ़ते हैं।

कीर्ति कटारिया सुपौत्री बाबू रामप्रताप कटारिया
ग्राम पो० पाल्हावास, जिला रेवाड़ी-१२३४०१

फरवरी २०१९ अंक मिला, धन्यवाद। मुखपृष्ठ पर आर्यसमाज के प्रवर्तक स्वामी दयानंद का चित्र मनोहरी है। पीछे के पृष्ठों में समाज की विभिन्न गतिविधियों का ज्ञान हुआ। आत्म निवेदन में 'कर्तव्य बोध' निडर स्वामी दयानंद द्वारा बताए सत्यमार्ग पर चलते रहने का कर्तव्य बोध कराने वाला है। वैसे भी संपादकीय का निष्कर्ष इधर उधर की फिजूल बातों में लगे रहने के बदले कल्याणकारी, परोपकारी तथा परलोक सुधारने वाले काम करते रहने का संदेश देने वाला होता है। आज लोगों में काम करने की संस्कृति लुप्त होती जा रही है। आदमी हरामखोर, लापरवाह, खुशामदी, चुगलखोर, आलसी, बिना कर्म किए या कर्म की अपेक्षा जल्दी और ज्यादा फल की उम्मीद करने वाला होता जा रहा है। कमाल की बात तो यह है कि कुछ न करके भी वह अपनी प्रशंसा खुद करने में लगा रहता है और दूसरे के अच्छे कर्मों पर भी मिट्टी डालने की कोशिश करता है। भला यह भी कोई जिंदगी है? कृष्ण जी ने कहा है- कर्म करो और फल की इच्छा मत करो! बेशक सभी ऐसा न करें लेकिन कर्म तो करना ही पड़ेगा। शेर जंगल का राजा होता है, लेकिन जब तक मांद से बाहर नहीं जाएगा शिकार स्वयं चलकर उसके पास थोड़े ही आ जाएंगे? सभी कर्म कर रहे हैं। सूरज, चांद, सितारे, ग्रह, नक्षत्र आदि हमें सभी चलते दिखाई देते हैं। सैनिक कर्म न करें तो शत्रु तो हमें जिन्दा ही न रहने दें। किसान कर्म न करें तो अनाज कहां से पैदा होगा और हम खाएंगे क्या? हम किसी न किसी से ही कुछ प्राप्त करते हैं तो उसके बदले में कर्म करके कुछ देना भी पड़ता है। नहीं देंगे तो संसार चक्र रुक जाएगा! साथ ही कर्म वह करें जो अनुकरणीय, प्रशंसनीय, सकारात्मक, सर्वहितकारी, लोक-परलोक सुधारने वाला हो। इस लाजवाब संपादकीय के लिए हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं। 'प्रभात वेला' ज्ञानवर्धक है। राजकुमार वर्मा की कविता 'आखिर कब तक?' संवेदनशील है। उमेदसिंह विशारद का लेख 'आज के युग में चरित्र निर्माण की महती आवश्यकता' बहुत उपयोगी और अनुकरणीय है। सभी समस्याओं का हल चरित्र निर्माण में ही है। कृष्णचंद्र गर्ग 'आर्य मान्यताओं के पुनः संस्थापक : दयानंद सरस्वती' में नई जानकारी देते हैं। वैद्य राजेंद्र आर्य ने अंग्रेजी चिकित्सा प्रणाली के संदर्भ में विस्तृत चर्चा की है। इसी कारण लोग आयुर्वेद की ओर बढ़ रहे हैं। बाल वाटिका में विभिन्न रचनाएं ज्ञानवर्धक, मनोरंजक तथा दिमाग की कसरत करने वाली हैं।

प्रोफेसर श्याम लाल कौशल
मकान नंबर 975 बी, ग्रीन रोड
रोहतक- 124001 (हरियाणा)

अनुशीलन सामवेद : आग्नेय पर्व

आधार आधेय

-लेखकः पं० चमूपति

त्वं हि क्षैतवद्यशोऽग्ने मित्रो न पत्यसे।
त्वं विचर्षणे श्रवे वसो पुष्टिं न पुष्यसि।।४।।

ऋषिः-भरद्वाज-वाजः-ज्ञान, अन्न आदि से पालन करने वाला।

(अग्ने!) हे अग्नि-देव! (त्वम्) तुम (यशः) यशः स्वरूप मनुष्य को (हि) ऐसे (पत्यसे) प्राप्त होते हो (न) जैसे (मित्रः) सूर्यः (क्षैतवत्) चराचर के निवास स्थान आकाश को, (विचर्षणे) हे सर्वद्रष्टा! (वसो) हे सबको आकाश की तरह वास देने वाले! (त्वं) तुम (श्रवः) हमारी दिव्य श्रुति को (पुष्यसि) पुष्ट करते हो (न) जैसे (श्रवः) अन्न (पुष्टिम्) पहिले से वर्तमान सृष्टि को।

हम अपने आप यशस्वी हों न हों, हमारी जबान पर दूसरे लोगों का यश ही रहता है। दूसरों के दोष नहीं, गुण देखते हैं। अपने सहकारियों से ईर्ष्या का वर्ताव न कर प्रीति ही का व्यवहार करते हैं। हमें इस गुर का ज्ञान हो गया है कि यज्ञ सहयोग का दूसरा नाम है। देवपूजा यज्ञ है, संगतिकरण यज्ञ है, दान यज्ञ है। ये तीनों क्रियाएँ निन्दा की मनोवृत्ति के रहते नहीं हो सकतीं। हम पूजा उसी की करेंगे जिसका यश हमारे हृदयों पर अंकित हो। किसी द्वेष के पात्र की पूजा ही क्या! संगति करण भी किसी प्रेम के पात्र के साथ ही हो सकता है। ऐसे ही दान। अपने साथ काम करने वालों का यश गाना यज्ञिय जीवन का श्रीगणेश ही है।

सूर्य प्रकाश का भाण्डार है। तापादि सभी शक्तियों का स्रोत है। संसार में कोई छोटी से छोटी क्रिया ऐसी नहीं हो रही, जिसका प्रेरक प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप में सूर्य न हो परन्तु सूर्य को कोई स्थान चाहिए जिसमें वह अपनी शक्तियों को क्रीड़ा का अवसर दे सके। आकाश की आवश्यकता पहले है, उसमें बसने वालों की पीछे। यही अवस्था रूप के अधिष्ठाता अग्नि-देव की है। यज्ञ-भावना, आधार यज्ञ की-अन्य सभी सहकारियों के प्रति स्तुति की-मनोवृत्ति है। जो सम्बन्ध सूर्य और आकाश का है, वही अग्नि-देव और प्रशंसा की मनोवृत्ति का। आकाश के रहते सूर्य अपने प्रकाश का प्रसार रोक नहीं सकता। ऐसे ही मनुष्यों में एक दूसरे का यश फैलाने का स्वभाव हो जाए तो उनकी क्रियाओं में अग्निदेव का प्रतिबिम्ब होना अनिवार्य है। ऐसे लोग अपने-आप यजमान बन जाते हैं। न बिना एक दूसरे की प्रशंसा के यज्ञ ही हो सकता है और न बिना यज्ञ की भावना को जाग्रत किए यश फैलाने की मनोवृत्ति ही रह सकती है। यज्ञ का निवास यश में है और यश का यज्ञ में।

वास्तव में सबको निवास देने वाला अग्नि-देव ही है। अग्नि-देव सर्वव्यापक है। इसी से वह सर्वज्ञ है-सर्वद्रष्टा है। हमें जब से व्यापक देवता की अनुभूति हुई है, एक दिव्य रागिणी -सी मन के कानों में गूँजती है। यह दिव्यनाद अत्यन्त सुरीला, अत्यन्त नशीला है। अग्नि-देव का दर्शन इस रागिणी को और अधिक मधुर बना रहा है। अग्नि का दर्शन स्थिर है, स्थायी है, ऐसे ही वह दिव्यनाद भी।

यह नाद एक बार हृदय की तह में उठ खड़ा हो सही। फिर यह ऊँचा-ही-ऊँचा उठता जाएगा। इसकी शक्ति बढ़ती ही जाएगी। इसका प्रभाव उत्तरोत्तर अधिक विस्तीर्ण होता जाएगा।

अन्न बल का मूल कारण है, परन्तु निर्बलों के लिए नहीं। निर्बल अन्न खायेगा तो अपनी निर्बलता को और अधिक बढ़ा लेगा। पुष्टि उसी की जा सकती है जो पहले से ही कुछ पुष्ट हो। रोगियों को बल-प्रद भोजन देने से उलटा विकार ही होगा।

भक्तों को दिव्य शब्द सुनाई देते हैं और तो ओर, उनके अपने शरीर की बनावट, उसकी नपी-तुली चेष्टाएँ एक मनोहर आलाप ही तो हैं। जब भक्त के कान में यह आलाप पड़ने लगे तो मान लो कि अब वह ऋषि बन जाने के रास्ते है। यह राग पहिले साधक के अपने हृदय ही से फूट निकलता है। फिर अन्दर-बाहर से वही अलौकिक गीत सुनाई देने लगते हैं। ये गीत प्रभु के हैं। प्रभु ने अपनी आवाज मानो हमारी आवाज से मिला दी है। गीत में जान आ रही है। आवाज उत्तरोत्तर पुष्ट-सुर से, ताल से, आन्तरिक प्रभाव से समृद्ध-होती जा रही है।

प्रभो! तुम सूर्य हो तो हम आकाश, तुम आकाश हो तो हम उसका सुरीला, नशीला शब्द। तुम हमारे लिये निवास-स्थान हो, हम तुम्हारे लिये। हमारा तुम्हारे बिना निर्वाह नहीं, तुम्हारा हमारे बिना। तो हम एकीभूत क्यों न हो जाएँ? हम आकाश की तरह झोली पसार दें। तुम सूर्य की तरह उसमें प्रकाश उंडेल दो। हम श्रुति हों, तुम श्रावक। हमारे अंग-अंग में बज रहे अनाहत नाद का स्रोत तुम्हीं हो। तुम गायक हो, हम गान। तुम वंशी हो, हम तान। कैसा अटूट आधार-आधेय सम्बन्ध है?

तुम निशिचर प्रभु हम निशा,
तुम रवि हम आकाश।
तुम इकले बिन भक्त ज्यों,
बिन आकाश प्रकाश।।

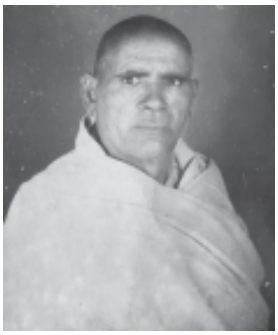

माता पिता अपने दायित्त्व को पहचानें

❒स्व० पण्डित चन्द्रभानु आर्योपदेशक, संस्थापक शांतिधर्मी

वर्ण, आश्रम व्यवस्था हमारे समाज की ऐसी व्यवस्थाएँ हैं, जिनका यथोचित पालन करने से बहुत सी समस्याएँ स्वयमेव समाप्त हो जाती हैं। वर्ण व्यवस्था अपनी रुचियों और क्षमताओं के अनुसार समाज की उन्नति में अपना योगदान करने की व्यवस्था है। वर्ण के नाम से ही स्पष्ट है कि यह जन्म पर नहीं, गुण कर्म पर आधारित है। जन्म पर आधारित किए जाने से तो इसका मूल उद्देश्य ही समाप्त हो जाता है।

ऐसी ही अन्य व्यवस्था आश्रम व्यवस्था है। इसमें मनुष्य अपने जीवन में भौतिक व आध्यात्मिक उन्नति करने के लिए अपनी आयु का सदुपयोग करता है। ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और संन्यास। जैसे वर्ण व्यवस्था छिन्न भिन्न हो गई है, आश्रम व्यवस्था का उससे भी अधिक ह्रास हुआ है। आश्रमों में ब्रह्मचर्य तो पूर्णतः ही समाप्त हो गया है। ब्रह्मचर्य की हानि होने से हमारे देश में विद्या, बुद्धि, बल, तेज की हानि हुई है। वानप्रस्थ और संन्यास भी दिखाई दे जाता है, लेकिन कोई विरले ही संन्यासी इस देश में मिलेंगे जो पूर्ण वैराग्य प्राप्त करके लोकोपकार और आत्मकल्याण के लिए संन्यास धारण करते हैं। अन्यथा तो तीर्थ स्थानों पर, रेलगाड़ियों में लोगों की धर्मभीरुता का दुरुपयोग करने वाले काषाय वस्त्र धारी लोगों की भीड़ दिखाई दे ही जाती है।

अब एक बचा गृहस्थ। लगता है कि मनुष्य के जीवन में एक ही आश्रम है और वह है गृहस्थ। गृहस्थ का अर्थ भी यही समझा जाता है कि विवाह कराना है और बच्चे पैदा करने हैं। हमारे समाज में तो छोटे छोटे बच्चों को विवाह के प्रबल संस्कार दिए जाने लगते हैं- तेरा ब्याह करेंगे। सरकार समाज को यौन शिक्षा की चिन्ता तो है, पर गृहस्थ किसलिए है, इस शिक्षा की कोई आवश्यकता नहीं समझी जाती। किसी पाठ्यक्रम में यह शिक्षा भी तो हो कि घर कैसे चलाना है। गृहस्थ भोग का स्थान नहीं है, बल्कि यह तो एक महान् यज्ञ है। बल्कि यह तो एक यज्ञशाला है जिसमें अपने सुखों, सुविधाओं को दूसरों के उपकार के लिए होमना पड़ता है। यह गृहस्थ ही अन्य सभी आश्रमों का आश्रय है। 'जितना कुछ व्यवहार संसार में है उसका आधार गृहाश्रम ही है। जो यह गृहाश्रम न होता तो सन्तानोत्पत्ति के न होने से ब्रह्मचर्य, वानप्रस्थ और संन्यासाश्रम कहाँ से हो सकते?-- परन्तु तभी गृहाश्रम में सुख होता है जब स्त्री और पुरुष दोनों परस्पर प्रसन्न, विद्वान् पुरुषार्थी और सब प्रकार के व्यवहारों के ज्ञाता हों।' (महर्षि दयानन्द) परिवार की व्यवस्था बिगड़ने से समाज की व्यवस्था बिगड़ती है। यही आज की अधिकांश समस्याओं का मूल कारण है।

गृहस्थ पितृऋण उतारने के लिए उत्तम सन्तान का निर्माण करके समाज को उत्तम नागरिक देने के लिए धारण किया जाता है। चाहे कितना ही कमा लिया हो, लेकिन यदि सन्तान को उत्तम संस्कार नहीं दिए तो परिवार बसाने का कोई अर्थ नहीं है। बल्कि यह एक पाप है, जिसका फल समाज तो भुगतता ही है, स्वयं व्यक्ति भी वृद्धावस्था में तिरस्कार और अपमान के रूप में भुगतता है। सफल गृहस्थ की एक ही कसौटी है- उत्तम सन्तान का निर्माण।

सन्तान का निर्माण कोई बच्चों का खेल नहीं है। यह कार्य बच्चे के जन्म से पहले शुरु हो जाता है। गर्भाधान संस्कार से लेकर उपनयन संस्कार तक सारा दायित्त्व माता पिता का ही है। गर्भाधान से पूर्व ही माता पिता अपने भोजन पर विशेष ध्यान देकर शांति, आरोग्य, बल, बुद्धि, पराक्रम और सुशीलता से सभ्यता को प्राप्त करें, जिससे रज वीर्य भी दोषों से रहित होकर अत्युत्तम गुणयुक्त हों।

बच्चों को सामाजिकता की शिक्षा माता पिता ही दे सकते हैं। जिस व्यवहार को वे स्वयं अपने लिए बुरा समझते हैं, उसी की शिक्षा जाने अनजाने में अपने बच्चों को देते हैं। बालक स्वभावतः निस्वार्थ और उपकारी होते हैं। माता पिता यह शिक्षा देते हैं कि उसको अपनी पुस्तक क्यों दी? किसी को अपनी खाद्य सामग्री मत देना। अंग्रेजी की ट्विंकल ट्विंकल तो सिखाएँगे और दूसरों को बड़े गर्व से सुनवाएँगे, पर उनको नमस्ते कहना नहीं सिखाएँगे। जो मां बाप अपने वृद्ध माता पिता की उपेक्षा करते हैं, वे अपने बच्चों से यह अपेक्षा कैसे करते हैं कि वे यह सब देखकर भी अपना समय आने पर उनकी पूजा करेंगे। बच्चों को जो बात बड़ी-बड़ी किताबों से नहीं सिखाई जा सकती वह आचरण से सिखाई जा सकती है। व्यावसायिक सफलता के अलावा सदाचरण, शिष्टाचार, उदारता, निःस्वार्थता और उपकार की भावनाएँ एक मनुष्य के लिए जीवन की सबसे बड़ी आवश्यकताएँ हैं, जिन्हें उत्तम आचरण करने वाले गृहस्थी लोग ही अपने बच्चों को सिखा सकते हैं।

शपथ का मूल्य

क्यों शपथ ली सत्य की जब साधना मन को न भाये?
शर्म से अब मुंह छिपाये!
जब नहीं है इष्ट मंजिल, क्यों अधम गिनता कदम है?
व्यर्थ है अभिनय विनय का, मूढ़ मृगतृष्णा सताये।।१।।

श्वेतपोशी छद्मवेशी छल रहा भोले मनुज को!
ओ विषैले व्याल! डसने को न जिह्वा लपलपाये।।२।।

रावणी करतूत वाले, राम का मत धार बाना,
जब तेरा शृंगार ही तम, क्यों दीये झूठे जलाये।।३।।

इन्द्र और कुबेर बनना लालसा मन को लुभाये,
सत्य करुणा न्याय की क्यों पातकी गरदन दबाये।।४।।

यह विषैली प्यास धन की स्वर्ग सुख कोरा भरम है,
बोल तू खुदगर्ज कितने सृजन के सरगम बजाये।।५।।

विश्व यह संग्राम स्थल है जिन्दगी भीषण समर है,
जीव तो शाश्वत अमर है मौत क्यों तुझको डराये।।६।।

जिन्दगी का मर्म क्या है? क्या अमरता चाहती है,
बन प्रबल मृत्युञ्जयी तू काल पर अधिकार पाये।।७।।

बन स्वयं आदर्श लिख इतिहास में अपनी कहानी,
देवता बन ले मनुज तू सृष्टि तेरे गीत गाये।।८।।

क्रान्ति के ही बाद आती शांति सच है राष्ट्रप्रहरी!
इसलिए हे कर्मयोगी! सत्य से मत डगमगाये।।९।।

–राधेश्याम जोशी 'विमलेश' छावन, हरदोई (उ० प्र०)

जी रहे हैं लोग!

जी रहे हैं लोग कैसे,आज इस वातावरण में।
दिन तो चिन्ताओं में बीते, रात कटती जागरण में।।
आंख ही निर्लज्ज हो, तो व्यर्थ घूंघट क्या करेगा।
आदमी नंगा खड़ा है, सभ्यता के आवरण में।।
सिंह भूखे मर रहे हैं, गीदड़ों घर खीर पकती।
सीखती हैं गीत कोयल, बैठ कौवों की शरण में।।
जल रहे हैं नीच जुगनूं, देख यौवन चान्दनी का।
दोष बगुले ढूंढ़ते हैं, हंस के हर आचरण में।।
राम को तजकर भरत, हैं आज रावण की तरफ।
लक्ष्मण का हाथ रहता, आज हर सीताहरण में।।
मौत के माथे मुकुट है, जिन्दगी की मांग सूनी।
मस्त हैं सब लोग केवल, उदर के पोषण–भरण में।।
मर रही इन्सान के, हाथों ही अब इन्सानियत है।
'वेदप्रिय' अब रुचि नहीं, इसकी रही धर्माचरण में।।

–वेदप्रिय शास्त्री

जल रहा है देश

–डॉ० महाश्वेता चतुर्वेदी

आज फिर से जल रहा है देश।
इस परीक्षा के समय में, नींद का है ज्वार।
फोड़ता है कान को, वह तीव्र हाहाकार।
मित्र बन कोई प्रपंची, आज फिर से छल रहा है देश।
धर्म की है यज्ञवेदी, माँगती बलिदान।
पास में संचित न समिधा, क्या करे फिर दान।
भारती हर पल उपेक्षित, त्रासदायक खल रहा है देश।
विश्वगुरु की भ्रान्त सन्तति, खो रही पहचान।
कौन करता है ऋचाओं का, सुधामय गान।
हर कदम पर हैं लुटेरे, भ्रष्टता से फल रहा है देश।
जो मुकुट कश्मीर को, माँ से झपटना चाहता है।
क्यों न बन कर रुद्र, ऐसों से निपटना चाहता है?
ज्योति का प्रतिमान होकर, सान्ध्य रवि सा ढल रहा है देश।

–प्रोफेसर्ज कालोनी, श्यामगंज बरेली–२४३००५

खाली वार न जायेगा

कायराना हमला करा दिया फिर से वीर जवानों पर।
सारी दुनिया थूक रही है इन पाकिस्तानी शैतानों पर।।
कितनी बार धूल चटाई फिर से मद में फूल गया।
सर्जिकल स्ट्राइक को शायद इतनी जल्दी भूल गया।।
अब कड़े कदम उठाने होंगे भारत के कर्णधारों को।
जल्दी सबक सिखाना होगा अलगाववादी मक्कारों को।।
जिनके दिलों में देश से नफरत और दिमाग में दंगा है।
जिनकी आंखों में चुभता भारत की शान तिरंगा है।।
जहर उगलते देशद्रोही इन सांपों का आतंक मिटाना है।
जाफर और जयचंदों का भारत से वंश मिटाना है।।
देशद्रोही नारे वालों के जो भी समर्थन में जाते हैं।
उन नेताओं को जूते मारो जो इनसे हाथ मिलाते हैं।।
अपने पुरखों की यह प्यारी हम जागीर नहीं देंगे।
इन निर्मल नदियों में बहता किसी को नीर नहीं देंगे।।
हुर्रियत आदि के दुष्टों को अब खाने को खीर नहीं देंगे।
स्वर्ग समान है मुकुट हमारा हम कश्मीर नहीं देंगे।।
उबल गया हर हिंदुस्तानी रक्त रगों में खौल उठा।
हिंदू मुस्लिम सिख इसाई एक स्वर में बोल उठा।।
पुलवामा में बहा खून जो वह बेकार न जाएगा
बदला बहुत भयंकर होगा खाली वार न जायेगा।।

–आनंद प्रकाश आर्य, जौरासी, पानीपत

राष्ट्र-चिन्तन

विश्व गुरु भारत

❑डॉ० प्रणव
पीलीभीत

हम हीनभावना त्याग, राष्ट्रीय स्वाभिमान जगाकर ज्ञान-विज्ञान के स्वकीय स्रोतों का अवगाहन करेंगे तो दुनिया को विश्वगुरु भारत के ही श्रीचरणों में आना पड़ेगा।

भारत ज्ञान का महाकाश है। सूर्य की प्रथम किरण इसी आर्यावर्त देश भारत पर पड़ी। विश्व मानवता के पूर्वज मनु ने, जिसकी संतान/प्रजा होने के कारण हम मानव या मनुष्य कहलाये, विश्व को प्रथम राजव्यवस्था दी।

विज्ञान के आधारभूत विषय गणित को कपिल मुनि ने सूत्रबद्ध किया। शून्य की अवधारणा भारत की देन है। आचार्य लगध ने ज्योतिष (गणित) में शून्य के प्रभाव का वर्णन किया है। भास्कराचार्य ने शून्य के प्रभाव के कारण ही लिखा है- अंकानां वामना गतिः।। गणना की शब्दावली दस, शत, सहस्र, लाख, करोड़, अर्व, खर्व, शंख, नील, पद्म आदि भारत की देन है। किसी भी देश के पास भारत से अधिक प्रमाणित गणितीय संख्याएं आज भी नहीं हैं।

किसी संख्या को शून्य सहित दस अंकों में व्यक्त करना और प्रत्येक अंक को एक निरपेक्ष मान और स्थानीय मान देना विश्व गणित को भारत का सबसे बड़ा योगदान है। भारत में दशमलव प्रणाली के कथित हडप्पा काल (३,००० ईसा पूर्व) से पूर्व प्रचलन में होने के प्रमाण मिल चुके हैं। बोधायन ने पैथागोरस से एक शताब्दी पूर्व अंकगणितीय क्रियाएं एवं वैदिक ज्यामिति स्थापित कर दी थी। आधुनिक वर्ग, वर्गमूल, घन, घनमूल आदि भारतीय गणित की देन हैं। गणित की आधुनिक अंक लेखन पद्धति को देखकर इस बात का सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है कि लिपियों का विकास भारत में ही हुआ। आधुनिक रोमन लिपि भारतीय लिपियों की ऋणी है। भारतीय कालगणना सबसे प्राचीन और प्रामाणिक है। लिपि और लेखन कला का विकास भारत की देन है। अंकों को हिन्द अर्थात् भारत से जाने के कारण आज भी उर्दू और अरबी में 'हिन्दसा' कहा जाता है।

नाटक, महाकाव्य, उपन्यास, कहानी, गीत, आख्याओं आदि का आविर्भाव भारत में हुआ। साम से प्राप्त संगीत ने भारत में उच्चता प्राप्त की। तुम्बरू, नारद, हरिदास, तानसेन और बैजू बावरा जैसे शास्त्रीय संगीत के विश्व विस्तारक भारत ने दिए हैं। कृष्ण की पौत्रवधू चित्ररेखा चित्रकला की प्रणेता थी, जिन्हें अपने करतल पर चित्र उतारने की कला आती थी। अध्यात्म के क्षेत्र में भारत की उन्नति का कोई सानी नहीं है। योगशास्त्र के प्रणेता पतंजलि आज भी दुनिया के मार्गदर्शक हैं। गौतम का न्याय, कणाद का वैशेषिक, कपिल का सांख्य, जैमिनी का पूर्वमीमांसा और व्यास का उत्तर मीमांसा सर्वोच्च प्रतिभा के अन्यतम उदाहरण हैं।

आचार्य कौटिल्य अर्थशास्त्र के प्रणेता हैं, जिन्होंने प्रथमतः राष्ट्रवादी अर्थशास्त्र की संकल्पना प्रस्तुत की। ई० पू० सातवीं शताब्दी में वास्तु संरचना का जो स्वरूप पाया गया है उसे अभी विश्व के अभियंता छू भी नहीं सके हैं। खगोल के क्षेत्र में आर्यभट्ट ने सूर्य की आभासी गति एवं खगोलीय यंत्रों पर प्रकाश डाला है। खगोल विज्ञान में वाल्मीकि सर्वप्रथम वैज्ञानिक माने जाएंगे, जिनकी सूर्य चंद्रमा एवं अन्य ग्रहों की दूरियां एवं गतियों का आकलन आज की ज्ञात दूरियों व गतियों के अनुरूप ही है। नागार्जुन का 'रस रत्नाकर' रसायन शास्त्र का कालजयी ग्रंथ है। नालंदा, विक्रमशिला व काशी में रसायन शास्त्र का अध्ययन करने हेतु छात्र दूसरे देशों से आते थे। अश्विनीकुमार, धनवन्तरि समग्र चिकित्सा शास्त्र के आविष्कर्त्ता हैं। विश्व ब्रह्मा, चरक, सुश्रुत व कश्यप जैसे भारत के ऋषियों का ऋणी है।

आज भौतिकी के क्षेत्र में अरस्तू, आर्कीमिडीज, गैलीलियो, केपलर, न्यूटन आदि कितने ही नाम गिनाये जा सकते हैं। ज्ञातव्य है कि ये सब ३८४ ई० पू० तक ही हुए हैं, जबकि भार, माप, गुरुत्व, पिंडों की गति, पाई एवं अनेक मापक सूत्रों का उल्लेख भास्कराचार्य ने पहले ही (४०० ई० पू०) किया है। ऋषि भारद्वाज की 'अंशुबोधिनी' में आधुनिक भौतिकी की सम्पूर्ण शब्दावली और मापकों का उल्लेख पहले से विद्यमान है।

नौपरिवहन में 'नेविगेशन' शब्द नावगति से बना है। विभिन्न शास्त्रों में ३२ प्रकार के विमानों का उल्लेख है। भारद्वाज के 'यंत्र सर्वस्व' में विमान निर्माण, विमान रक्षा, यात्रियों की रक्षा, यान के चालक की रक्षा एवं रक्षा सामग्री का प्रथमतः उल्लेख है। आचार्य शौनक ने ५६ प्रकार के कृतक विमानों का वर्णन किया है। समरांगण सूत्र में तेल के स्थान पर पारे से विमान उड़ाए जाने का उल्लेख है। पुष्पक विमान में स्थान बढ़ाने तथा एक स्थान सदा ही खाली रहने की विशेषता का उल्लेख इतिहास ग्रंथों में पाया जाता है।

आज विश्व के विकशित देश वैज्ञानिक व भौतिक प्रगति में अपना डंका भले ही बजा रहे हों, पर जब भारतीय हीनभावना को छोड़, राष्ट्रीय स्वाभिमान जगाकर ज्ञान-विज्ञान के स्वकीय स्रोतों का अवगाहन करेंगे तो सम्पूर्ण विश्व को विश्वगुरु भारत की ही श्रीचरणों में आकर बैठना पड़ेगा।

शिक्षा-विमर्श

शिक्षा पर भारी परीक्षा

❑डॉ० सन्तोष गौड़ राष्ट्रप्रेमी, (09996388169)
जवाहर नवोदय विद्यालय, केन्द्रीकोणा, साउथ वैस्ट गारो हिल्स-794106 मेघालय

शिक्षा मानव के लिए अनिवार्य आवश्यकता है। शिक्षा के बिना मानव को पशु के समान कहा गया है। निःसन्देह मानव प्राणी और अन्य जानवरों में जैविक दृष्टि से कोई भेद नहीं है। शिक्षा ही वह महत्वपूर्ण तत्व है, जो मानव को अन्य प्राणियों से विशिष्ट बनाता है। जन्म के समय मानव बच्चा इतना निरीह होता है कि वह अपनी माँ के स्तन को भी अपने मुँह में नहीं ले सकता। माँ उसे दूध पीना सिखाती है और यहीं से उसकी शिक्षा की शुरूआत होती है। कालान्तर में शिक्षा के विभिन्न स्तरों को पार करते हुए मानव प्रकृति पर विजय प्राप्त करने की बात करने लगता है। अन्य ग्रहों पर अधिकार प्राप्त करना चाहता है। यह सब कुछ शिक्षा के द्वारा ही संभव होता है।

शिक्षा पर बड़ी-बड़ी पुस्तकें लिखी जाती रहीं हैं। विश्व में अनेक पुस्तकालय शिक्षा संबंधी पुस्तकों से भरे पड़े हैं। शिक्षा के महत्त्व पर अशिक्षित भी बहुत अच्छी बातें करता है किंतु शिक्षा को वास्तविक जीवन में उतारने में कथनी-करनी का भेद प्रभावी हो जाता है। व्यावहारिक रूप से शिक्षा का अर्थ बड़ा ही सरल है। शिक्षा का अर्थ सीखना है। जब हम कुछ भी नया सीखते हैं, वह शिक्षा है। सीखने के स्थान, तरीके या स्रोत भिन्न-भिन्न हो सकते हैं। कहीं से भी, किसी से भी, कहीं पर भी हम जो कुछ भी सीखते हैं, वह शिक्षा है।

संसार के अधिकांश व्यक्ति न केवल अपने आपको बल्कि अपने बच्चों को भी अधिक से अधिक व श्रेष्ठ से श्रेष्ठ सिखाना चाहते हैं। यह सिखाना केवल विद्यालयों या कॉलेजों तक सीमित नहीं होता। देखने में आता है कि रास्ते चलते हुए अपरिचित व्यक्ति को भी हम सिखाने का प्रयास करने लग जाते हैं। कई बार अपरिचित व्यक्तियों से भी हमें इतनी महत्वपूर्ण सीख मिल जाती है कि वह हमारे जीवन में क्रांतिकारी परिवर्तन ले आती है। वास्तविकता यही है कि शिक्षा का महत्व सार्वभौमिक और सार्वकालिक है।

औपचारिक शिक्षा में शिक्षा का आकलन परीक्षा के द्वारा किया जाने लगा है। विभिन्न परीक्षा प्रणालियों में विभिन्न प्रकार की मूल्यांकन की व्यवस्था है। परीक्षा ने शिक्षा के क्षेत्र में इतना अधिकार जमा लिया है कि परीक्षा के खौफ से बहुत बड़ी संख्या में विद्यार्थी आत्महत्या करके अपने जीवन को ही त्याग देते हैं। शिक्षा से वे यह नहीं सीख पाते कि शिक्षा जीवन के लिए है, न कि जीवन शिक्षा के लिए। जीवन को गुणवत्तापूर्ण व उपयोगी बनाने के लिए शिक्षा एक आधार होती है किंतु संसार में स्वाभिमानपूर्ण जीवन से अधिक महत्वपूर्ण कुछ भी नहीं है। जहाँ तनाव, अवसाद या आत्महत्या की बात आती है, वहाँ शिक्षा नदारद होती है। शिक्षा जीवन जीना सिखाती है, जीवन समाप्त करने को मजबूर करना शिक्षा का क्षेत्राधिकार नहीं है। अतः तनाव, अवसाद व आत्महत्या की ओर ले जाने वाली परीक्षा प्रणाली पर व औपचारिक शिक्षा प्रणाली या इसकी प्रक्रिया पर पुनर्विचार की आवश्यकता है।

वर्तमान में शिक्षा गौण होती जा रही है और प्रमुख स्थान परीक्षाएं लेती जा रहीं हैं। समस्या यहीं से पैदा होती है। हम शिक्षा का नाम लेकर परीक्षा पास करने पर जोर देते हैं। विद्यार्थी परीक्षा पास करने के लिए पढ़ता है, अध्यापक परीक्षा पास करवाने के लिए पढ़ाते हैं। अभिभावक परीक्षाओं में अधिक अंक लाने के लिए अपने पाल्यों को कोचिंग सेन्टरों में भेजते हैं। जब सब कुछ परीक्षा पास करने के लिए किया जा रहा है तो शिक्षा कहाँ से प्राप्त होगी। हमें समझने की आवश्यकता है कि शिक्षा प्राप्त करने के लिए परीक्षा आवश्यक नहीं है, सीखना अपने आप में महत्वपूर्ण है। सीखकर हमें प्रमाण पत्र चाहिए, तभी परीक्षा की आवश्यकता पड़ती है। विश्व में अनेक ऐसे उदाहरण मिल जायेंगे, जिन्होंने कोई परीक्षा नहीं दी किंतु उच्च स्तर की विद्वता प्राप्त की। शिक्षा प्राप्त करने के बाद परीक्षा केवल मूल्यांकन के लिए होती है, ताकि हम शिक्षा के आगे के स्तर की ओर अग्रसर हो सकें। दुर्भाग्य से हम शिक्षा को छोड़कर परीक्षा पर जोर देने लगे हैं। जबकि परीक्षा पर जोर देने की आवश्यकता ही नहीं है।

हमारे सामने समस्यायें इसलिये पैदा होती हैं कि हम प्राथमिकताओं का गलत निर्धारण कर लेते हैं। हमें समझना होगा और समझाना होगा कि परीक्षा नहीं सीखना महत्वपूर्ण है। परीक्षा तो एक मापन का यन्त्र है, जैसे- हम दूध पीना चाहते हैं किन्तु हम लीटर को पकड़ लेते हैं,

जबकि लीटर नहीं दूध की पौष्टिकता महत्वपूर्ण है। लीटर पर जोर देने के कारण ही मिलावट सामने आती है। ठीक इसी प्रकार परीक्षा पर जोर देने के कारण ही परीक्षायें तनाव का कारण बनती हैं। यही नहीं परीक्षाओं पर अधिक जोर देने के कारण ही अनुचित साधनों का प्रयोग बढ़ता जा रहा है। स्थान-स्थान पर परीक्षा पास करने पर ही जोर दिया जाता है। परीक्षा पास कराने के लिए कौचिंग संस्थान खूब फल-फूल रहे हैं। परीक्षा पास करने पर जहाँ मिठाइयाँ बाँटी जाती हैं, वहीं परीक्षा में असफल रहने पर मुँह लटक जाते हैं। विद्यार्थी ही नहीं अभिभावक भी बेइज्जती का अनुभव करते हैं। ये परिस्थितियाँ परीक्षार्थी को तनाव, अवसाद और आत्महत्या की ओर ले जाती हैं। इसी तनाव, अवसाद या आत्महत्या की परिस्थितियों को कम करने के उद्देश्य से प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी भी परीक्षाओं पर चर्चा का राष्ट्रव्यापी कार्यक्रम का आयोजन कर देते हैं।

वास्तविकता तो यह है कि परीक्षा नहीं, सीखना महत्वपूर्ण है। जब हम सीखने पर जोर देंगे, तो सब कुछ आसान हो जायेगा। सीखना आनन्ददायक हो जायेगा। हमें मालूम ही नहीं पड़ेगा कि कब परीक्षा हुई, क्योंकि जब आप सीखने पर ध्यान केन्द्रित करेंगे तो परीक्षा तो एक खेल मात्र रह जायेगी। अतः सीखने पर भी चर्चा होनी चाहिये। देश के लिये सीखना, समाज के लिये सीखना, परिवार के लिये सीखना, जीवन के लिये सीखना सबसे आगे बढ़कर आनन्द के लिये सीखना। जब सीखना ही महत्वपूर्ण होगा तो परीक्षा तनाव नहीं आनन्द देने लगेगी जिसके लिये किसी तैयारी की आवश्यकता ही नहीं होगी।

वास्तविकता यही है कि हमें परीक्षा के लिए किसी तैयारी की आवश्यकता नहीं है। हाँ, हर क्षण सीखने के लिए तैयार रहने की आवश्यकता है, क्योंकि सीखना ही हमें मानवता के विकास के पथ पर ले जाता है। सीखते और सिखाते समय हमें सदैव सावधान रहना होगा कि शिक्षा पर परीक्षा भारी न पड़ जाये।

आर्यों के मांसाहार की वास्तविकता

❑राजेशार्य आट्टा

एक ओर तो विदेशियों की झूठी पत्तल चाटने वाले तथाकथित इतिहासकार मात्र पाँच हजार वर्ष पुराने 'महाभारत-युद्ध' को काल्पनिक कह रहे हैं दूसरी ओर वन्ध्या के पुत्र के विवाह की भाँति आर्य-द्रविड़ युद्ध को मानो प्रत्यक्ष देख रहे हैं। एक ओर तो युद्ध में घोड़ों का बहुत महत्त्व बता रहे हैं, दूसरी ओर आर्यों द्वारा उन्हें मारकर खाने की मूर्खतापूर्ण कल्पना कर रहे हैं। देखिये-

यदि नो गां हंसि यद्यश्वं यदि पूरुषम्।
तं त्वा सीसेन विध्यामः : ---।। (अथर्व० १-१६-४)

अर्थात् यदि तुम हमारी गाय, घोड़े और पुरुष को मारोगे तो हम तुम्हें सीसे (सिक्के की गोली) से बींध देंगे।

ऋग्वेद मण्डल १०, सूक्त ८७, मंत्र १६ के अनुसार मनुष्य और घोड़े आदि पशुओं के मांस से रंगरलियां मनाने वाले को राक्षस कहा है और उसका सिर काटने का आदेश दिया है। **''गां मा हिंसीरदितिं विराजम्'' ''अश्वं मा हिंसीः'' ''इमं मा हिंसीः--वाजिनम्--''** आदि मंत्रों में गाय, घोड़े आदि को किसी भी सूरत (अवस्था) में न मारने योग्य कहा है। वेदों में यज्ञ के लिए एक 'अध्वर' (हिंसा रहित) शब्द आया है और गाय के लिये 'अघ्नया' (जिसका किसी भी अवस्था में वध न किया जा सके) शब्द आया है। यजुर्वेद के निम्नलिखित वाक्यों में भी अहिंसा और प्रत्येक प्राणी के लिए असीम प्रेम, सहानुभूति की भावना झलकती है-

पशून पाहि, गां मा हिंसीः, अजां मा हिंसीः, अविंमा हिंसीः, इमं गा हिंसीर्द्विपादं पशुं, मा हिंसीरेकशफं, पशुं, मा हिंस्यात् सर्वभूतानि।।

अर्थात् पशुओं की रक्षा करो। गाय, बकरी, भेड़ को मत मारो, दो पैर वाले मनुष्य और पक्षियों को मत मारो, एक खुरवाले घोड़े-गधे को मत मारो और किसी भी प्राणी को मत मारो। संस्कृत का शब्द-कोष विपुल होने के कारण प्रमाद, लोभ और स्वार्थवश धूर्तों ने अर्थ का अनर्थ कर महाभारत के बाद यज्ञों में हिंसा का प्रचलन कर दिया।

'भाव प्रकाश' में लिखा है-

मांसे द्रवे चेक्षुरसे पारदेमधुरादिषु।
बाल रोगे विषे नीरे रसो नवसु वर्तते।।

अर्थात मांस, द्रव, ईंख का रस, पारद, मधुरादि छह रस, बालक का एक रोग, विष, जल और काव्य के नौ रस इन सबको रस कहा जाता है। इसी प्रकार जिह्वा वाणी, पृथ्वी, किरण और इन्द्रियों को भी गौ कहा गया है। अतः प्रसंग को देखकर ही अर्थ ग्रहण करना चाहिए।

स्पष्ट है कि आर्यों द्वारा मांसाहार का दावा करने वाले लेखक संस्कृत साहित्य का अध्ययन तो करते नहीं, विदेशियों के पक्षपातपूर्ण लेखन की मक्खी पर मक्खी मारते रहते हैं।

ओ३म् अग्ने व्रतपते व्रतं चरिष्यामि, तच्छकेयं तन्मेराध्याताम्। इदमहमनृतात् सत्यमुपैमि।।

भगत सिंह, धर्म और ईश्वर

❒गुरप्रीत चहल, सिरसा (8059274467)

भगतसिंह को देश के लिए सर्वस्व बलिदान करने वाले आदर्श की बजाय ईश्वर विरोधी व धर्मविरोधी के रूप में प्रस्तुत किया जा रहा है, जो कि अर्धसत्य है।

भारत के युवाओं में जो दीवानगी शहीद-ए-आजम भगतसिंह के लिए १९३१ में थी वही आज भी मौजूद है। भगतसिंह भारत के नौजवानों के दिलों की धड़कन हैं।

भगतसिंह व बलिदान दोनों एक दूसरे के पूरक बन चुके हैं, पर बामसेफ व वामपंथी विचारधारा वाले भगतसिंह के नाम का गलत फायदा उठाते हैं।[१] उनको देश के लिए सर्वस्व बलिदान करने वाले आदर्श की बजाय ईश्वर विरोधी व धर्मविरोधी के रूप में प्रस्तुत किया जा रहा है, जो कि अर्धसत्य है। न तो वे धर्मविरोधी थे और न पूर्णतः नास्तिक बन पाए थे। हाँ, उनका झुकाव जीवन के अंतिम वर्षों में नास्तिकता की ओर हो गया था। इसके कुछ कारण थे-

❖असहयोग आंदोलन के बाद भारत में जगह-जगह हुए हिंदू मुसलमानों के अमानवीय दंगों से उनके मन में धर्मों के प्रति नकारात्मकता पैदा हुई।

दंगों पर वे लिखते हैं- 'लाहौर के दंगों की मारकाट इसलिए नहीं की गई कि फलां आदमी दोषी है, वरन् इसलिए की गई कि फलाँ आदमी हिंदू है, सिख है या मुसलमान है। बस किसी बंदे का सिक्ख या हिंदू होना मुसलमानों द्वारा मारे जाने के लिए काफी था। इसी तरह किसी का मुसलमान होना ही उसकी जान लेने के लिए पर्याप्त तर्क था।'[२]

❖दूसरा मुख्य कारण था- विश्व भर में साम्यवाद की लहर। उस दौर में (१९१८-३१) साम्यवाद सफलता के शिखर पर था। भगतसिंह व उसके अन्य क्रांतिकारी साथी भी उस दौर में साम्यवाद की ओर आकर्षित हुए थे। भगतसिंह तो विशेषकर पाश्चात्य विद्वानों की ही पुस्तकें पढ़ा करते थे। उन्होंने अपने एक लेख में कहा भी था कि उनकी एशियाई (भारतीय) साहित्य पढ़ने की इच्छा थी, पर यह इच्छा पूरी न हो सकी। जेल में भगतसिंह ने गीता रहस्य भी पढ़ने के लिए मंगवाई थी।[३] संभवतः इससे पहले उन्होंने गीता को पूर्ण रूप से पढ़ा भी नहीं था।

भगत सिंह के धर्म विरोधी होने की वास्तविकता

इसमें संदेह नहीं कि भगतसिंह, रामप्रसाद बिस्मिल आर्य, चन्द्रशेखर आजाद जैसे क्रांतिकारी मजहबों के नाम से होने वाले दंगों से क्षुब्ध रहते थे। एक जगह तो भगतसिंह

देशभक्त बलिदानी सुखदेव, भगतसिंह व राजगुरु

ने यहां तक लिख दिया था कि इन धर्मों (बखेड़ों) ने देश का नाश कर दिया। भगतसिंह ही क्यों, अन्य कोई भी नौजवान होता तो वह भी मजहबी दंगों पर यही राय रखता; पर क्या भगतसिंह पूर्णतः (या वास्तव में) धर्म विरोधी थे? नहीं। क्योंकि उनका विरोध धर्म के नाम पर होने वाले दंगों, शोषण व राजनीति से था न कि धर्म से। धर्म के मुद्दे पर भगतसिंह व उनके साथियों में काफी विचार-विमर्श हुआ था, जिस पर उन्होंने अपने विचार किरती अखबार के मई, १९२८ के अंक में लिखे थे। धर्म पर इनका निष्कर्ष था कि धर्म मुख्यतः तीन हिस्सों में विभाजित है-

१ एसेंशियल ऑफ रिलीजन (Essential of religion) यानि धर्म की जरूरत। अर्थात् सच बोलना, चोरी न करना, गरीबों की मदद करना इत्यादि।[४]

२ फिलोसोफी ऑफ रिलीजन (Philosophy of religion) यानि पुनर्जन्म, जन्म-मृत्यु, संसार-रचना, मोक्ष आदि का दर्शन।

३ रिट्यूअल्स ऑफ रिलीजन (Rituals of religion) यानि रस्मो रिवाज वगैरह। अर्थात् खतना करवाना, चोटी रखना, जनेऊ या कृपाण ग्रहण करना आदि।

भगतसिंह व उनके साथियों का इस पर कहना था कि रिट्यूअल्स ऑफ रिलीजन और फिलोसफी ऑफ रिलीजन व अंधविश्वास; इनका मिश्रण ही किसी का धर्म है तो हमें मंजूर नहीं और यदि एसेंशियल ऑफ रिलीजन व फिलासफी ऑफ रिलीजन पर स्वतंत्रतापूर्वक विचार मिलकर यदि धर्म बनता है तो धर्म मंजूर है।

भगतसिंह की प्रेरणा : बाबाजी सरदार अर्जुनसिंह; पिताजी सरदार किशनसिंह व चाचा सरदार अजितसिंह

भगत सिंह की नास्तिकता की समीक्षा

भगतसिंह का झुकाव अंतिम वर्षों में नास्तिकता की ओर हो गया था, पर क्या वे पूर्णतया नास्तिक थे? बिल्कुल नहीं। आओ कुछ मुख्य-मुख्य प्रमाण देखें-

प्रमाण १- ईश्वर उन्हें बल दे :- भगत सिंह १९३० में अपने एक लेख में घोषणा कर देते हैं कि 'मुझे ईश्वर में विश्वास नहीं' पर मई १९२७ में 'किरती' पंजाबी अखबार में 'विद्रोही' नाम से उन्होंने 'काकोरी वीरों का परिचय' नाम से लेख लिखा था, जिसमें वे लिखते हैं कि- 'ईश्वर उन्हें बल दे व शक्ति दे कि वे वीरता से अपने दिन पूरे करें व इन वीरों का बलिदान रंग लाए।' (५)

प्रमाण २- १९२८ में अमेरिका में बसे अपने मित्र अमरचंद को पत्र में वे लिखते हैं- 'अभी तक कोई मुकदमा मेरे विरुद्ध तैयार न हो सका। (दशहरा बम कांड केस में) व ईश्वर ने चाहा तो हो भी न सकेगा--- आज १ वर्ष होने को आया पर जमानत वापस ने ली गई, जिस तरह ईश्वर को मंजूर होगा।'

प्रमाण ३- 'आज सूफी अंबाप्रसाद जी इस देश में नहीं हैं। भगवान उनकी आत्मा को शांति दे।' (६)

प्रमाण ४- अक्टूबर १९२८ में किरती पत्रिका में 'कूका विद्रोह-२' लेख में वे लिखते हैं- 'पंजाब को सोये थोड़े ही दिन हुए थे-- कुछ ईश्वर ने हालात भी ऐसे ही पैदा कर दिए थे।'

प्रमाण ५- जेल बुक के एक लेख में वे लिखते हैं-

'दफन न होते आजादी पर मरने वाले
पैदा करते हैं मुक्ति बीज
फिर और बीज पैदा करने को,
देह मुक्त जो हुई आत्मा
उसे ना कर सकते विच्छिन्न
अस्त्र-शस्त्र अत्याचारी के।। (७)

प्रमाण ६- सन् १९२६ में सहपाठी जयदेव गुप्ता को पत्र में भगत सिंह लिखते हैं- 'जैसे पुराना कपड़ा उतार कर नया बदला जाता है, वैसे ही मृत्यु है। मैं उससे डरूँगा नहीं, भागूँगा नहीं।'

प्रमाण ७- फांसी लगने से लगभग २ घंटे पहले वकील प्राणनाथ मेहता ने भगतसिंह से पूछा कि आप की अंतिम इच्छा क्या है? तब भगतसिंह ने कहा कि मैं इस देश में फिर से जन्म लेना चाहता हूं ताकि इसकी सेवा कर सकूँ।' (८)

इन सात प्रमाणों के अलावा ७-८ प्रमाण और भी मौजूद हैं जो भगतसिंह की नास्तिकता पर प्रश्न चिह्न खड़ा करते हैं। एक तरफ तो वे कुछ जगह नास्तिक होने की बात करते हैं तो कुछ जगह अपने पत्रों/लेखों में आस्तिक होने का संकेत कर रहे हैं। इससे सिद्ध है कि वे साम्यवादी पाश्चात्य साहित्य पढ़ने के कारण और तथाकथित धर्मों के दंगों के फलस्वरुप नास्तिकता की ओर झुकाव तो रखने लग गए थे पर पूरी तरह नास्तिक नहीं बन पाए थे। यानि दिमाग से तो नास्तिक थे, पर दिल से नहीं। ईश्वर पर उनका संदेह दार्शनिक न होकर स्थिति और समय (काल) प्रभावित था। काश! उन्होंने गुरुदत्त विद्यार्थी की रचनाओं को पढ़ा होता तो संभवत वे भी दूसरे गुरुदत्त होते।

संदर्भ :

१-यह सर्वविदित तथ्य है कि उनका परिवार आर्यसमाजी था व वे आर्यसमाजी वातावरण में ही पले बढ़े थे।

२- जून १९२८ किरती अखबार का लेख 'सांप्रदायिक दंगे व उनका इलाज'

३- २६ अप्रैल १९२९, दिल्ली जेल से पिताजी को लिखा पत्र

४- मनु भगवान ने भी धर्म के १० लक्षण इसी प्रकार गिनाए हैं- धैर्य, क्षमा, दम, अस्तेय, शौच, इंद्रियनिग्रह, धी (बुद्धि) विद्या, सत्य व क्रोध न करना। (मनुस्मृति ६/९२)

५-भगतसिंह व साथियों के दस्तावेज : सं० जगमोहन सिंह व चमनलाल संस्करण १९८७

६-भगतसिंह के संपूर्ण दस्तावेज : सं० चमनलाल पेज १७९

७-शहीदे आजम की जेल नोटबुक सं० सत्यम वर्मा, लखनऊ

८-युगद्रष्टा भगतसिंह-- लेखिका वीरेंद्र सन्धू पेज २४४

आन्तरिक और बाह्य शुद्धि

शौच अर्थात् शुद्धि के नियम का पालन करने से सब प्रकार के शारीरिक, वाचिक और मानसिक मल तथा विक्षेप नष्ट हो जाते हैं। दोष, दुर्गुण और दुर्व्यसन दूर होकर सद्गुणों में रूचि बढ़ती है। इससे व्यावहारिक उन्नति और परमार्थिक आनन्द की प्राप्ति का द्वार खुल जाता है। मलों से घृणा होकर चित्त शुद्धि द्वारा, मकान, वस्त्र और जल, वायु शुद्ध होकर जनता का स्वास्थ्य उत्तम होता है। अन्न और फलादि सात्विक गुणयुक्त बनकर लोक में सात्त्विक भावों की वृद्धि होती है और तामसिक भाव नष्ट होते हैं।

-पं० जगदेव सिंह सिद्धान्ती

राष्ट्र-चिन्तन

आर्यों के देशान्तरण का मनघड़न्त सिद्धान्त

❑**महीपाल आर्य पूनिया**, (प्राध्यापक) ग्रा० पो० मतलौडा, जिला हिसार (9416177041)

यद्यपि ऋषिवर दयानन्द ने वेदों के आविर्भाव का काल एक अरब छियानवे करोड़ वर्ष पूर्व (सृष्टि उत्पत्ति के कुछ काल पश्चात्) बताया। उन्होंने सत्य पर आधारित वास्तविक इतिहास हमारे सामने रखा। स्वामी विवेकानन्द के अनुसार अंग्रेजों द्वारा लिखा गया हमारे देश का इतिहास हमारे दिमाग को कमजोर करने का एक साधन मात्र था।

पिछली अनेकानेक पीढ़ियों से हमारी पाठ्यपुस्तकों मे इस बात पर खासतौर से जोर दिया गया है कि हमारे देश में आर्यों का आगमन मध्य एशिया से हुआ है। इतना ही नहीं पाठ्यपुस्तकों में तो यहाँ तक भी वर्णन है कि आर्यों ने हमारे देश में जबरन घुसपैठ की तथा यहाँ के स्थाई निवासियों (द्रविड़, कौल आदि) का कत्लेआम किया, उनकी भूमि हड़प ली तथा उनको दास अथवा गुलाम बना डाला।

क्योंकि प्रथम प्रभाव ही अन्तिम होता है इसलिए हमने भी आर्यों की इस तरह से देशान्तरण की कहानी को ऐतिहासिक वास्तविकता मानते हुए अपनी मान्यता दे दी। यहाँ तक कि नेहरूजी की पुस्तक पर आधारित एक दूरदर्शन धारावाहिक ''भारत एक खोज'' में भी यह दर्शाया गया कि भारी विरोध के बावजूद यहाँ के स्थाई निवासियों पर अपने तीर एवं कमानों के बल पर अतिक्रमण कर आर्यों ने इस देश को अपना स्थाई निवास बना डाला।

सर्वप्रथम स्वामी दयानन्द ने आर्यों के इस देशान्तरण इतिहास को महज कोरी कल्पना बताया तथा दृढ़तापूर्वक कहा कि 'किसी संस्कृत ग्रंथ में नहीं लिखा कि आर्य लोग ईरान से आए और यहाँ के जंगलियों को लड़कर, जय पाके, निकाल के इस देश के राजा हुए, पुनः विदेशियों का लेख कैसे माननीय हो सकता है?' इतना ही नहीं, उन्होंने कहा- 'यह देश देवनिर्मित आर्यावर्त्त इसलिए कहाता है कि 'देव' नाम विद्वानों ने बसाया और आर्य जनों के निवास करने से आर्यावर्त्त कहाया है।'

डा० भीमराव अम्बेडकर ने भी अपने मन्तव्य अनुसार आर्यों के किसी अन्य देश से भारत में देशान्तर संबंधी सिद्धान्त को सिरे से ही नकार दिया। कोई भी प्राचीनतम ग्रन्थ, पुस्तक अथवा आधिकारिक सूत्र यह वर्णन नहीं करता कि आर्यों का देशान्तरण इस देश में अन्यत्र कहीं से हुआ है। फिर भी कोई यदि कहता है कि आर्य विदेशों से यहाँ आकर बसे हैं तो यह जातिगत अवचेतना ही कही जायेगी जैसा कि पारसियों के बारे में कहा गया है।

इस प्रकार की अनेकानेक अटकलबाजियाँ उन्नीसवीं सदी में विदेशियों द्वारा लगाई गई तथा कुछ भारतीयों ने इन्हें बिना किसी प्रश्न के स्वीकार कर लिया। क्या कोई प्रवासी व्यक्ति तथाकथित रूप से अपनाई गई धरती से इतना प्यार कर सकता है? तथा इतनी बड़ी धरती पर इतनी अधिक संख्या में तीर्थस्थान स्थापित कर सकता है? हिमालय पर जहाँ देवताओं (देव नाम विद्वानों का है।) का वास है, वहीं गंगा और यमुना हमारी दो ऐसी नदियाँ है जिनके सान्निध्य में हमारे इतिहास पुराण, शास्त्रों तथा लोकगीतों का निर्माण हुआ है। यहीं पर अयोध्या हरिद्वार, अवन्तिका, काशी, कांचीपुरी तथा द्वारिका जैसे अनेक तीर्थ हैं। प्राचीन समय से ही परिवहन के साधारण साधन होते हुए भी खतरनाक यात्रा करते हुए पचास लाख से अधिक लोग कुंभ मेले में इकट्ठे होते थे। यदि आर्य किसी और देश से आए होते तो उस देश में भी तो उनके कोई चिह्न मिलते।

जिन्होंने भी इस तथ्य की खोज की उनको पीसने के लिए, काटने के लिए अंग्रेजों ने अपना साम्राज्यवादी कुल्हाड़ा चलाया। स्वतंत्रता सेनानी अंग्रेजों को कहते थे कि आप विदेशी शासक हो इसलिए भारत छोड़ो। अंग्रेज भी 'फूट डालो और राज करो।' की नीति के तहत कहते थे कि तुम आर्य बाहरी शासक हो। पहले तुम भारत छोड़ो क्योंकि तुम उनसे भी पहले के आक्रमणकारी हो। यही वह बात थी जो द्रविड़ों और दूसरे दक्षिण भारतीयों के हृदय में घर कर गई कि वही (द्रविड़) वास्तव में भारत के सच्चे मालिक हैं। यह भी वास्तविकता है कि दक्षिण भारतीय आर्यों के शत्रु कदापि नहीं थे। वे वैदिक संस्कृति के पवित्र एवं सच्चे प्रतिनिधि थे। आज भी उनके यज्ञ-आयोजन, वेदों का ज्ञान, असंख्य मन्दिर तथा जीवन-पद्धति उन्हें उत्तर भारतीयों की अपेक्षा श्रेष्ठ हिन्दू साबित कर रहे हैं।

आखिरकार साम्राज्यवादी षड्यन्त्र कामयाब हुआ व आज भी दक्षिण भारत के लोग अपने को उत्तर भारतीयों से अलग मानते हैं तथा इसी विचारधारा ने उनके भीतर तक घर कर लिया है। जैसा कि बुद्धि कहती है इसी मान्यता के चलते उत्तर और दक्षिण के भेद के कारण आज तक हमें

इतनी मानवीय हानि उठानी पड़ी है जितनी द्वितीय विश्वयुद्ध में भी नहीं हुई थी। उत्तर और दक्षिण भारत के विभेद का यह षड्यंत्र देश के लिए कितना घातक सिद्ध हो रहा है, यह सर्वविदित है।

वेदों में तो अंधकार (अज्ञान) एवं प्रकाश (ज्ञान) तथा धर्म और अधर्म के बीच आन्तरिक युद्ध की बात कही गई थी जिसकी गलत व्याख्या करते हुए इसे आर्यों (गोरे) तथा द्रविड़ों (काले) के बीच वास्तविकता युद्ध बता दिया गया। आर्य शब्द का अर्थ ही है–'एक उच्च गुणवत्ता वाला पुरुष' अथवा 'भद्र पुरुष'। स्वामी दयानन्द के अनुसार 'आर्य नाम धार्मिक, विद्वान्, आप्तपुरुषों का और इनसे विपरीत जनों का नाम 'दस्यु' अर्थात् डाकू, दुष्ट, अधार्मिक और अविद्वान् है।' सीता ने राम को आर्यपुत्र कहकर पुकारा तथा वाल्मीकि व दशरथ दोनों ने ही कैकयी को अभद्र नारी कहा।

आर्य सभ्यता मानव जाति की प्राचीनतम सभ्यता है। 'वेद' मानव जाति की एक प्राचीनतम पुस्तक है जो कि आज तक विद्यमान है। आर्यों को अपने इतिहास की जीवटता तथा अपनी सभ्यता और संस्कृति पर पूर्ण विश्वास है। उनको गुलाम बनाने के लिए अंग्रेजों ने उनके अन्दर हीन भावना पैदा करने का प्रयास किया कि वे भी चुपचाप अंग्रेजी साम्राज्य को स्वीकार कर लें जो कि उनको आधुनिक संस्कृति एवं विज्ञान की शिक्षा देने में समर्थ है। इस प्रकार से मैक्समूलर ने आर्यों का मनघड़ंत इतिहास बनाया। उसके अनुसार आर्य भारत में १५०० ई०पू० आये तथा ३०० ई०पू० उन्होंने वेदों का निर्माण किया व इस प्रकार से हिन्दू धर्म (वैदिक धर्म) की उत्पत्ति हुई।

यद्यपि ऋषिवर दयानन्द ने वेदों के आविर्भाव का काल ईसा से लाखों वर्ष पूर्व (सृष्टि उत्पत्ति के कुछ काल पश्चात्) बताया। उन्होंने सत्य पर आधारित वास्तविक इतिहास हमारे सामने रखा। स्वामी विवेकानन्द के अनुसार अंग्रेजों द्वारा लिखा गया हमारे देश का इतिहास हमारे दिमाग को कमजोर करने का एक साधन मात्र था। वे केवल हमारे पतन की ही बातें करते हैं। अपनी दोहरी नीतियों को सिद्ध करने के लिए साम्राज्यवादियों ने इतिहास को अपने हिसाब से घड़ दिया। जब नैपोलियन से इतिहास की पुस्तक के बारे में पूछा गया तो उसने कहा–'मेरे झूठ को मेरे पास लाओ।' यही उस समय की राजनीति थी यही आज की राजनीति है।

जर्मन विद्वान मैक्समूलर जो कि आक्सफोर्ड में संस्कृत के प्रोफेसर थे तथा ऋग्वेद का अनुवाद कर रहे थे, को, मैकाले ने इस प्रकार का अनुवाद करने को कहा जिससे कि भारतीय अपने वेदों तथा धर्म से ग्लानि करने लग जायें। इसी के चलते प्रो० मैक्समूलर ने अपनी पत्नी को लिखा कि आर्य धर्म और संस्कृति अब दम तोड़ रही है। अब यदि ईसाइयत अपना प्रचार-प्रसार नहीं करती तो यह किसका दोष है? उसने वैदिक मंत्रों के अर्थ का अनर्थ करके मांस भक्षण के विधान का सम्बन्ध वेदों से स्थापित करने का अन्य विद्वानों के साथ मिलकर कुचक्र चलाया। उसके दु:साहस को समय रहते रौंदा ऋषिवर दयानन्द ने। उन्होंने देश, काल, स्थिति की नब्ज को पहचानते हुए आर्यसमाज की स्थापना करके मैक्समूलर जैसे कथित विद्वानों के स्वप्नों को चकनाचूर कर दिखाया। अविद्या और अंधकार में डूबी जनता को दलदल से निकालकर 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' वेदों की ओर लौटो का संदेश देकर संजीवनी औषधी पिलाकर छूआछूत और अनपढ़ता रोग से दूर कर दिया।

इनता ही नहीं विदेशी विद्वानों ने आम आदमी को उलझा देने के लिए मोहनजोदड़ो तथा हड़प्पा संस्कृति जैसे अपरिचित नामों का उल्लेख किया। ये तो महान वैदिक सभ्यताएँ थीं। ये कोई जादुई नाम नहीं थे। मोहनजोदड़ों तो पश्चिमी पंजाब में मोन्टेगोमैरी के पास एक स्थान का नाम है, जबकि हड़प्पा सिन्ध के लरकाना जिले में एक स्थान का नाम है। (अब पाकिस्तान में) १९२० ई० में सर जान मार्शल ने इनकी खुदाई करके इतिहास रचा था। इन स्थानों से मानवीय जीवन भूकम्प तथा बाढ़ के कारण पूर्णत: खत्म हो चुका था। २२०० ई० पू० इन स्थानों पर बड़ा भारी अकाल पड़ा जो कि दो सदियों तक चला जिसका मार्कण्डेय पुराण में भी वर्णन है। इसके चलते यहाँ के लोग यहाँ से विस्थापित हो गए थे। उन्होंने इसे सिन्धु घाटी की सभ्यता के नाम से पुकारा। इसे तो सरस्वती घाटी की सभ्यता के नाम से पुकारा जाना चाहिए था क्योंकि सरस्वती महान् नदी थी, कहीं-कहीं तो यह आठ से चौदह कि०मी० तक चौड़ी थी। प्रयाग में यही सरस्वती नदी गंगा और यमुना के साथ 'त्रिवेणी' के रूप में जानी जाती है। इसका प्रवाह भूतल के नीचे से माना गया है। यह २००० ई० पू० भौगोलिक कारणों से लुप्त हो गई थी। पुरातत्त्वविदों ने तो इसके प्रवाह का मार्ग भी बताया है।

संस्कृत आर्यों की भाषा थी। महर्षि पाणिनी जो विश्व के महानतम व्याकरणविद् थे, उन्होंने भी संस्कृत को विश्व की भाषा बताया था। ऑक्सफोर्ड शब्द-कोष ने भी अपने V-I प्रकाशन में इसे संसार की प्राचीनतम भाषा बताया है। इसी संस्कृत भाषा में हमारा ज्ञान, विज्ञान, इतिहास मौजूद है। इसमें तनिक भी संदेह और वाद-विवाद की गुंजाईश नहीं है। यही संस्कृत भाषा आर्यों की भाषा थी, है और रहेगी। आर्यों के देशान्तरण के मनघड़ंत सिद्धान्त को भारतवर्ष के पाठ्यक्रमों से निकाल देना समय की मांग है। ❑❑❑

पर्यावरण

बीस मिनट का हवन : पूरे दिन का सुरक्षा कवच

❑**आचार्य आर्य नरेश जी,** हिमाचल

देश-विदेश में अनेक स्थानों पर किये जा चुके परीक्षणों से यह सिद्ध हो चुका है कि यज्ञ मात्र एक धार्मिक पूजा पाठ ही नहीं, अपितु वर्तमान के प्रदूषित वातावरण से मुक्त रहने का एक महान् सुरक्षा कवच है। 'यज्ञ' जहाँ मानसिक रोगों, शारीरिक रोगों तथा वनस्पतियों के विभिन्न रोगों को दूर करके उन्हें स्वस्थ तथा उन्नत करता है, वहाँ वर्तमान के प्रदूषित वातावरण से बचने का एक प्रमुख वैज्ञानिक साधन भी है।

प्रत्येक बुद्धिजीवी बढ़ते हुए प्रदूषण से विशेष चिन्तित है, जिसके कारण कैंसर, दमा, श्वास, पोलियो तथा एलर्जी आदि के अनेक रोग तीव्र गति से मनुष्यों की जान ले रहे हैं। बुद्धिमान् व्यक्ति की बड़ी-बड़ी डिग्रियाँ तथा धनवान् व्यक्ति की बड़ी-बड़ी धनराशियाँ कुछ भी काम नहीं आती, जब वह व्यक्ति किसी कैंसर जैसे रोग का शिकार हो चुका होता है। ऐसे रोगों का चिंतन मात्र ही व्यक्ति को भयभीत कर देता है क्योंकि इनका पता ही रोगी को तब चलता है, जब ये अपना पूरा जाल शरीर में बिछा चुके होते हैं।

यदि इस प्रदूषण के आतंक से मुक्ति चाहते हैं तो हमारा यह सुझाव है कि प्रतिदिन अपने घर पर यज्ञ किया करें। प्रातः काल केवल बीस मिनट के समय में थोड़ी सी सामग्री तथा घृत से होने वाला यह वैदिक यज्ञ आपको लगभग २४ घंटे तक एक 'कवच' की तरह प्रदूषित वातावरण से बचाता रहेगा। विज्ञान के मूलस्रोत अथर्ववेद में कहा गया है कि 'तम् आहरामि निर्ऋते उपस्थात्' अर्थात् यज्ञ करने वाले को यज्ञ की पावन अग्नि मृत्यु की कोख से भी बचा लाने की शक्ति रखती है।

हमारे पर्यावरण में स्वाभाविक रूप से सल्फर, नाइट्रोजन, कार्बनडाईऑक्साईड, मोनोऑक्साइड तथा एस० पी० एम० (सस्पैन्डिड पार्टीकुलेट मैटर) रहते हैं। ये जीवन के लिए उस समय घातक हो जाते हैं, जब गाड़ियों तथा फैक्ट्रियों से निकलने वाले ऑक्साइड जैसे कि सल्फर डाईऑक्साईड SO_2, नाइट्रसऑक्साइड N_2O व मोनो ऑक्साइड CO तथा लैड की मात्रा को अनुपात से अधिक बढ़ा देते हैं। फटती हुई ओजोन लेअर, बढ़ते हुए वैश्विक तापमान (ग्लोबल वार्मिंग) तथा धुएं के बढ़ते हुए लैड युक्त एस० पी० एम० कैंसर जैसे भयंकर रोगों का कारण बन रहे हैं। इनसे शीघ्र बचने का सरल व सर्वोत्तम साधन केवल महर्षि दयानन्द द्वारा प्रदर्शित वैदिक आर्ययज्ञ ही है। मात्र बीस मिनट में गुड़, चावल, गुग्गल, गिलोय व गोघृत और आम आदि की समिधा (लकड़ी) के स्थान पर गाय के गोबर से बनी समिधा भी प्रयोग करके हम यज्ञ का अनुष्ठान कर सकते हैं। यदि सभी मंत्र न आते हों तो उनको सीखने तक हम गायत्री मंत्र से भी पैंतीस आहुतियाँ डाल सकते हैं। (बत्तीस प्रातः सायं की और तीन पूर्णाहुति मिलकर पैंतीस होती हैं।) गिलोय आदि के साथ कुछ मात्रा में दूसरी सामग्री भी मिलाई जा सकती है। इन जड़ी बूटियों के जलने से फार्मेल्डीहाइड, इथाइल, मिथाईल अल्कोहल व प्रोपीनोईक एसिड डिस्न्फैक्टिव तत्त्व निकलते हैं, जो पूरा दिन शरीर के भीतर व बाहर कवच के रूप में आपको घर तथा बाहर के प्रदूषित वातावरण से बचाते रहते हैं। यज्ञ-हवन से निकलने वाले ये मूल्यवान तत्त्व आर्य प्रमाण हवनकुण्ड (महर्षि दयानन्द द्वारा निर्दिष्ट आकार के) के उच्च तापमान प्रदूषित वातावरण में उपस्थित सल्फर डाईऑक्साईड, नाइट्रस ऑक्साइड व मोनोऑक्साइड को भेद करके उन्हें पुनः सल्फर व ऑक्सीजन, नाइट्रोजन व ऑक्सीजन तथा नेसेन्ट ऑक्सीजन व ओजोन में बदल देते हैं। सस्पैंडिड पार्टिकुलेट मैटर यज्ञीय घृत व एन्टीसैप्टिक गैसों के संयोग से प्रभावित होकर हानिरहित हो जाते हैं तथा उनकी वायुमण्डल में मात्रा बहुत कम हो जाती है। गाय के गोबर में उपस्थित मिथेन विघटित होकर पर्याप्त हाइड्रोजन उत्पन्न करती है, जो ग्लोबल वार्मिंग को रोकने का सर्वोत्तम साधन है। यज्ञ की इस भेदन शक्ति की चर्चा वैदिक वैज्ञानिक व स्वतंत्रता के प्रथम मंत्रदाता आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थप्रकाश के तीसरे समुल्लास में की थी।

वैदिकयज्ञ की इस वैज्ञानिक प्रक्रिया द्वारा पर्यावरण शुद्ध होता है, उसमें पुनः ऑक्सीजन की वृद्धि होती है और ओजोन की वृद्धि से ओजोन लेअर की रक्षा होकर पृथ्वी का मानव अधिक ताप से होने वाले अनेक प्रकार के रोगों तथा प्राकृतिक विपदाओं से भी बचा रहता है। हवन के पश्चात् पांच बार आभ्यन्तर कुम्भक या दस बार उद्गीथ ध्वनि प्राणायाम् करने से शरीर के बाहर तथा भीतर यज्ञीय एन्टीसैप्टिक गैसिस एक ऐसा प्रतिरोधी कवच बनता है, जो पूरे दिन प्रदूषण तथा रोग के किटाणुओं से हमारी रक्षा करता है। इसके साथ-साथ यदि चार छोटे चम्मच यज्ञ की भस्म को छानकर पानी के मटके में प्रातःकाल डालकर दिन भर उसी का प्रयोग करें तो शूगर, हाई ब्लड प्रेशर व एलर्जी में विशेष लाभ होगा, इसीलिए प्राचीन ऋषि व वर्तमान के आर्य मनीषी स्वास्थ्य तथा दीर्घायु को प्राप्त करते रहे हैं।

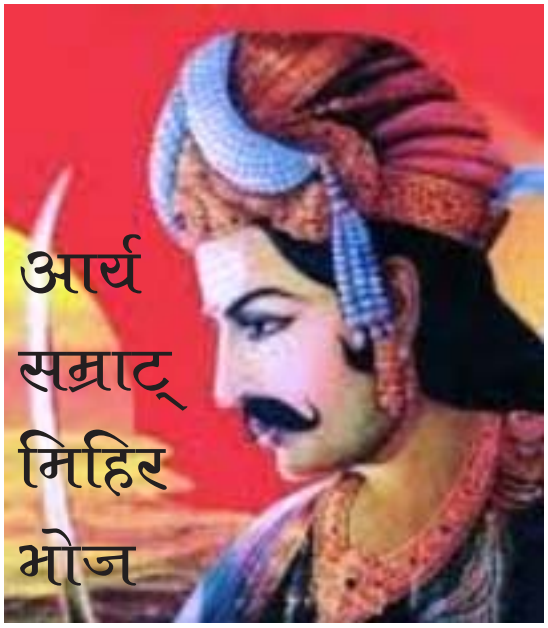

❑**राकेश कुमार आर्य** सम्पादक उगता भारत

आर्यावर्त्त की सीमाओं का सर्वाधिक प्रामाणिक और प्राचीन प्रमाण हमें मनुस्मृति से मिलता है, जिसे विद्वानों ने भूमध्यसागर और कैस्पियनसागर तक विस्तृत माना है। विद्वानों की यह भी मान्यता है कि इस आर्यावर्त्त के अंतर्गत स्थित जम्बूद्वीप आज का एशिया और यूरोप था। जबकि भरतखण्ड (हिमालय के दक्षिण में स्थित विस्तृत भूखण्ड) वर्तमान भारत है।

जिन लोगों ने हमें अपने गौरवपूर्ण अतीत से काटने का अभियान चलाया, उन्होंने सर्वप्रथम हमें हमारी संस्कृत भाषा से काटा। एक सुनियोजित षडयंत्र के अंतर्गत संस्कृत को मृतभाषा घोषित किया गया और ऐसे प्रयास किये गये जिससे संस्कृत पिछड़े हुए लोगों की रूढ़िवादी भाषा जान पड़े। इस सर्वाधिक सुसंस्कृत और वैज्ञानिक भाषा के स्थान पर हमें अन्य भाषाओं को प्रगतिशील और वैज्ञानिक कहकर अपनाने के लिए प्रेरित किया गया। धीरे-धीरे विदेशी अपने षडयंत्र में इस सीमा तक तो सफल हो ही गये कि उन्होंने अपने समर्थन में यहां के कुछ 'साहित्यिक जयचंदों' को खरीद लिया। इन 'जयचंदों' ने अपने छलछंदों का ऐसा जाल फैलाया कि हर देशभक्त देशवासी की आत्मा चीत्कार कर उठी।

इस राष्ट्रघाती मनोवृत्ति का परिणाम यह हुआ कि संस्कृत हमारे किन्हीं विशेष अवसरों या विवाहादि संस्कारों पर बोली व सुनी जाने वाली पंडितों की भाषा बनकर रह गयी। एक समय होता था जब संस्कृत में बड़े सूक्ष्म विषयों पर गंभीर शास्त्रार्थ हुआ करते थे। तब लोग संस्कृत की

क्या ही अच्छा होता कि भारत के विषय में जानने समझने वालों के लिए या उस पर शोध करने वालों के लिए संस्कृत का ज्ञान आवश्यक किया जाता। यदि ऐसा हो जाता या अब भी हो जाए तो कितने ही तथाकथित और स्वयंभू विद्वान मैदान छोड़कर स्वयं ही भाग जाएंगे अथवा कितनों की ही अवैज्ञानिक, अतार्किक और अप्रमाणिक धारणाएँ स्वयं ही धूलि धूसरित हो जाएंगी।

व्याकरण को पढ़ना भी अनिवार्य मानते थे और यदि कोई गलत उच्चारण करता था तो उसे भी पकड़ लिया करते थे। आज जैसी स्थिति नहीं थी कि जब अपने आप को विद्वान् मानने वाले लोग भी खिचड़ी 'हिन्दुस्थानी' या 'हिंग्लिश' का प्रयोग करते हैं और व्याकरण का कोई ध्यान नही रखते हैं।

इस स्थिति में संस्कृत के पंडितों ने भी संस्कृत के श्लोकों को केवल बोलने के लिए रटना आरंभ कर दिया और आज हम देखते हैं कि पंडितजी जब हमारे घरों में संकल्प कराते हैं तो उस संकल्प मंत्र में 'आर्यावर्त' 'जम्बूद्वीप' 'भरतखण्ड' का उच्चारण तो करते हैं पर कभी उनके विषय में किसी को समझाते नही हैं कि यह आर्यावर्त, जम्बूद्वीप और भरतखण्ड हैं क्या? वह बोलते जाते हैं और हम सुनते जाते हैं। इसी को अंध परंपरा कहते हैं। इस अंध परम्परा ने हमको अपने मूल से काट दिया है। इसी के चलते हमारे कुछ तथाकथित विद्वानों और लेखकों को अपनी विद्वत्ता का प्रदर्शन करते हुए भारत की जड़ें विदेशों में खोजने का अवसर मिल गया।

क्या ही अच्छा होता कि भारत के विषय में जानने समझने वालों के लिए या उस पर शोध करने वालों के लिए संस्कृत का ज्ञान आवश्यक किया जाता। यदि ऐसा हो जाता या अब भी हो जाए तो कितने ही तथाकथित और स्वयंभू विद्वान मैदान छोड़कर स्वयं ही भाग जाएंगे अथवा कितनों की ही अवैज्ञानिक, अतार्किक और अप्रमाणिक धारणाएँ स्वयं ही धूलि धूसरित हो जाएंगी। ऐसी स्थिति में इतिहास को बड़ी राहत मिलेगी। क्योंकि कथित विद्वानों ने इस विषय के साथ बड़े अत्याचार किये हैं। यदि संस्कृत का ज्ञान इतिहास पर शोध करने वालों के लिए अनिवार्य कर दिया जाए तो भारत अपनी भाषा में बोलने लगेगा और स्वयं ही कह देगा कि-मेरा मूल सर्वाधिक प्राचीन है।

जिन लोगों ने आर्यों को विदेशी सिद्ध करने का राष्ट्रघाती प्रयास किया है उनकी मान्यताएं तब स्वयं ही धूलि धूसरित हो जाएंगी-जब वे हमारे पंडितों के संकल्प मंत्र के भावार्थ को समझ लेंगे। तब उन्हें किसी भी विदेशी साहित्यकार के कथनों या उद्धरणों के भ्रमजाल में फंसने की आवश्यकता नहीं रहेगी। ऐसे लोगों को चाहिए कि वे आर्यावर्त की मनुस्मृति में

उल्लेखित सीमाओं को खोजें, फिर जम्बूद्वीप की सीमाओं का ज्ञान लें और तत्पश्चात् भरतखण्ड का चित्र बनायें। इन लोगों से गलती ही यह होती है कि ये आज के भरतखण्ड अर्थात भारतवर्ष को ही संपूर्ण भारत या कभी का आर्यावर्त मान लेते हैं। जबकि आज का भारतवर्ष तो कभी के आर्यावर्त का एक टुकड़ा (भरतखण्ड= खण्ड का तात्पर्य एक टुकड़ा ही तो है) है। इनकी भ्रामक अवधारणा का निराकरण होते ही हमारे तथाकथित इतिहास लेखक स्वयं ही समझ जाएंगे कि उनका परिश्रम कितना निरर्थक और अनुपयोगी रहा है?

अब गुर्जर सम्राट मिहिर भोज की ओर आइये। सम्राट् मिहिरभोज के पश्चात् ९१५-१६ ई० में बगदाद का निवासी अलमसूदी गुजरात आया था। वह कहता है कि गुर्जर (जुज्र) साम्राज्य में १,८०,००० गांव, नगर तथा ग्रामीण क्षेत्र थे। अलमसूदी से हमें पता चलता है कि यह साम्राज्य उस समय दो हजार किलोमीटर लंबा और दो हजार किलोमीटर चौड़ा था। यह साम्राज्य तुर्क और मुगल शासकों के सुल्तानों या बादशाहों के साम्राज्य से बहुत बड़ा था। पर देखिये लेखनी का धर्म बेचने वालों का चमत्कार कि उन्होंने इस साम्राज्य के आधे या चौथाई भाग पर राज्य करने वाले तुर्क या मुगल शासकों के तो गुण गाये, पर अपने राजाओं के गुण गाने में उनकी लेखनी की स्याही सूख गयी और उनके मस्तिष्क को पक्षाघात हो गया। इस देश में अपनों को भूल जाना ही धर्मनिरपेक्षता है। गुर्जर प्रतिहार शासकों के लिए यह भी विचारणीय है कि उन्हें अपनी जनता का समर्थन प्राप्त था। इसलिए कहीं पर भी कोई असंतोष या विद्रोह की भावना जनता के मध्य नहीं थी। यदि ये सम्राट् विदेशी होते तो उन्हें यहाँ की जनता का भारी असंतोष झेलना पड़ता। क्योंकि भारत की जनता स्वभावतः स्वतंत्रता प्रेमी रही है और इतिहास बताता है कि इसने ऐसे राजाओं या विदेशी शासकों के शासन के विरुद्ध विद्रोह का झण्डा उठाये रखा जो कि विदेशी था और विदेशी होकर अपने विचारों को भारत पर थोंपना चाहता था।

भारत के लोगों ने गुर्जर सम्राटों को न केवल इसलिए अपना समर्थन दिया कि वे देशी थे और यहाँ शांति व्यवस्था बनाये रखकर राज करना चाहते थे, अपितु इसलिए भी अपना समर्थन दिया कि ये गुर्जर सम्राट् अपने देश की सीमाओं से विदेशी धर्म व विदेशी शासक दोनों को ही भगाने और मिटाने के लिए कृतसंकल्प थे। अपने इसी उद्देश्य की प्राप्ति के लिए गुर्जर सम्राट् मिहिर भोज के पास विशाल सेना थी। अल मसूदी से ही हमें पता चलता है कि राजा की सेना के चार अंग थे और प्रत्येक में सात से नौ लाख सैनिक थे। उत्तर की सेना लेकर मिहिर भोज मुस्लिम शासकों के विरुद्ध दीर्घकाल तक संघर्ष करते रहे थे।

भारत की जनता स्वभावतः स्वतंत्रता प्रेमी रही है और इतिहास बताता है कि इसने ऐसे राजाओं या विदेशी शासकों के शासन के विरुद्ध विद्रोह का झण्डा उठाये रखा जो कि विदेशी था और विदेशी होकर अपने विचारों को भारत पर थोंपना चाहता था।

अब यह तथ्य भी विचारणीय है कि गुर्जर सम्राट् मिहिर भोज का मुस्लिम विदेशी शासकों से यह संग्राम क्या केवल राजनीतिक कारणों से था या इसके कुछ और भी कारण थे? बात स्पष्ट है कि जिस समय मिहिर भोज विदेशी आततायियों को या आक्रांताओं को देश की सीमाओं से खदेड़ने का कार्य कर रहे थे उस समय धर्मरक्षा और देश रक्षा सबसे बड़ा धर्म था। सम्राट् मिहिर भोज और विदेशी मुस्लिम आक्रांताओं के मध्य होने वाले युद्ध फ्रांसीसियों और अंग्रेजों के मध्य होने वाले युद्ध नहीं थे, जिनका एकमात्र उद्देश्य इस देश पर अपना अवैध नियंत्रण स्थापित करना था।

जो लोग ऐसा मानते हैं कि सम्राट् मिहिर भोज और उनके समकालीन मुस्लिमों का संघर्ष भारत पर कब्जा करना था-वे नितांत मूर्खों के स्वर्ग में रहते हैं। उन्हें ज्ञात होना चाहिए कि जब फ्रांसीसी और अंग्रेज इस देश पर अपना नियंत्रण स्थापित करने के लिए लड़ रहे थे उस समय उनमें से किसी को भी इस देश की चेतनाशक्ति या जनसाधारण का समर्थन प्राप्त नहीं था और उन दोनों में से कोई सा भी इस देश की संस्कृति की रक्षा के लिए संघर्ष नहीं कर रहा था। देश की जनता जानती थी कि ये दोनों ही हमारे लिए घातक होंगे। जबकि सम्राट् मिहिर भोज इस देश की चेतनाशक्ति को बलवती करने के लिए, उसकी सुरक्षा के लिए संघर्ष कर रहे थे।

उनके संघर्ष का उद्देश्य राजनीतिक उद्देश्य से अलग हटकर सांस्कृतिक और धार्मिक अधिक था जो उन्हें इस राष्ट्र की मूल चेतना से जोड़ता था, उसके साथ एकाकार करता था। यदि इन गुर्जर सम्राटों के मुस्लिम आक्रांताओं के साथ संघर्ष के केवल राजनीतिक कारण ही होते तो ये लोग तीन सौ वर्ष तक लगातार देश की रक्षा का भार नही संभालते। दूसरे तब वह भी इस देश को मुस्लिमों की तरह लूटते और अपना खजाना भरते। जबकि इन शासकों ने तो देश की पश्चिमी सीमा की ओर से होने वाले अरब आक्रमणों को रोकने के लिए एक अलमहफूज नामक नगर ही बसा दिया था, जहां से ये लोग देश की रक्षा करते रहे और हर विदेशी आक्रामक को उससे परे ही रोके रहे। ऐसे स्वर्णिम इतिहास के महानायक गुर्जर सम्राट मिहिर भोज को कोटिशः नमन। ❐❐❐

एक उपेक्षित बलिदान

अमर शहीद दीवान सिंह भनवाला

❐**अमित आर्य**, सिवाहा, जिला जींद (9728509096)

क्या जवां है नौजवानो, जिस जवां में दम नहीं,
जवान वो होता है जिसको जिंदगी का गम नहीं।
कह दिया दुश्मन को डटकर तू नहीं या हम नहीं,
और क्या जवां है जालिमों पै फैंका जिसने बम नहीं।।
(स्वामी भीष्म जी)

भारत देश को आजादी दिलाने वाले वीरों के जीवन पर प्रकाश डालें तो मेरे पास शब्द नहीं हैं। इन्हीं वीरों की कुर्बानी से प्रेरणा लेकर हमारे वीर बांकुरों ने दुश्मनों के दांत खट्टे किये हैं। बात चाहे भारत चीन युद्ध की हो, या भारत पाकिस्तान युद्ध की। एक ऐसे ही वीर योद्धा थे- अमर शहीद दीवान सिंह भनवाला जी।

शहीद दीवान सिंह भनवाला जी का जन्म गांव सिवाहा जिला जींद में एक साधारण किसान परिवार में १ जुलाई १९३८ को हुआ। इनके पिता जी श्री लहरीसिंह एक साधारण किसान थे, लेकिन उनमें वैदिक विचारधारा कूट कूट कर भरी थी। गांव के अन्य बच्चों की तरह इनको भी पढ़ने के लिए स्कूल में भेज दिया। पढ़ते-पढ़ते दसवीं पास की। और लम्बी बात क्या है, ये भारतीय आर्मी (RAJ RIFILES) में मात्र १८ वर्ष की आयु में १० नवम्बर १९५६ को भर्ती हो जाते हैं।

इनकी सबसे पहली पोस्टिंग जम्मू कश्मीर की थी। ये जम्मू कश्मीर में ३ जुलाई १९५९ तक रहे। इसके बाद १९६१ से १९७० तक बंगाल आसाम बॉर्डर पर रहे। इसी दौरान इनको १९६५ में रक्षा मैडल, सैन्य सेवा मैडल, ९ वर्ष long service मैडल इत्यादि मिले। १९७० से १९७१ तक ये मिजोरम व त्रिपुरा सीमांत क्षेत्र में रहे। उसी दौरान भारत पाकिस्तान का युद्ध छिड़ गया। १९७१ की लड़ाई! कौन भूल सकता है इस लड़ाई को!! १० दिसंबर १९७१ भारत बांग्लादेश के बॉर्डर पर तैनात ये हवलदार दुश्मनों का सामना करते करते वीर गति को प्राप्त हो जाता है। लेकिन जब तक सांसें चलतीं रहीं, तब तक दुश्मनों के दांत खट्टे करते रहे। ३ दिसंबर से १६ दिसंबर तक चले इस भयंकर युद्ध में भारत की सेना ने अपने ३९०० सैनिकों को खो दिया। न जाने कितने बंधक बने। शहीदों की सूची में मेरे गांव सिवाहा से अपना नाम स्वर्ण अक्षरों में अंकित कर गए।

कहते हैं उस मिट्टी की महक अलग होती है, उस मिट्टी की पहचान अलग होती है जहाँ से शहीद पैदा होते हैं। मिट्टी का ऋण लिये अनेकों नौजवान मिल जाएगें, उस ऋण को चुकता करने वाले शूरवीर विरले ही पैदा होते हैं, जो अपनी जननी और जन्मभूमि को भी धन्य कर जाते हैं। इन शहीदों ने तो अपने प्राणों की आहुति देकर देश की रक्षा की। दुर्भाग्य तो उनके बलिदानों के कारण सुख की नींद सोने वालों का है, जो उन्हें याद कर के सिर झुकाने का फर्ज भी अदा नहीं करते, उनको अपना आदर्श मानना तो दूर की बात है। क्या हमारा फर्ज नहीं बनता कि इन शहीदों के इतिहास लोगों को सुनाएँ!

बड़े दु:ख के साथ लिखना पड़ रहा है कि मेरे गांव से अकेले शहीद हैं, लेकिन आज तक गांव में इनकी पुण्यतिथि पर किसी प्रकार का कोई आयोजन नहीं हुआ। यह कैसी उदासीनता है। जहाँ तक मेरी याद में गांव में लगभग १५ वर्ष तक कबड्डी प्रतियोगिता होती रही, लेकिन एक बार भी शहीद दीवान सिंह का नाम नहीं लिया गया।

लोग कहते हैं- शहीदों की चिताओं पर लगेगे मेले। और आगे क्या लिखें, शहीद दीवान सिंह भनवाला जी का कोई स्मृति स्थल तक गांव में नहीं है। ४५ साल से इसी इंतजार में उस परिवार की आंखे तरस गईं। आखिर कब तक शहीदों के साथ ऐसी उपेक्षा होती रहेगी! सरकारी दफ्तरों के चक्कर काट-काट कर वह परिवार टूट चुका है, थक चुका है। एक बात बड़े बुजुर्गों और नौजवान साथियों से कहना चाहता हूँ- जीवंत आदर्शों के रूप में शहीदों के प्रति उदासीनता आने वाली पीढ़ियों के लिये भी बहुत नुकसान दायक सिद्ध होगी। आखिर किसी को तो आगे बढ़कर उनको समुचित सम्मान देने का बीड़ा उठाना पड़ेगा।

और एक बात! चुनाव आ रहे हैं। गांव आने वाले नेताओं से शहीद दीवानसिंह भनवाला जी के स्मृति स्थल की मांग करें। मैं नमन करता हूँ अमर शहीद दीवान सिंह भनवाला जी को। मुझे पूर्ण आशा और विश्वास है कि अगला कोई भी आयोजन गांव में हुआ, वह आपके नाम से होगा। जय हिंद। जय भारत!!

वेद स्वाध्याय

ब्रह्मचारी लोकान् पिपर्ति

ब्रह्मचारी तीनों लोकों का पालन, पोषण, पूरण कैसे करता है!

❑रामफल सिंह आर्य
C/O श्री नरेश कुमार C-21, आनन्द विहार मैट्रो पिल्लर 695 के पास, उत्तम नगर नई दिल्ली-110059

आदरणीय पाठकगण! इस लेख के शीर्षक के रूप में जो मंत्रांश हमने दिया है उसका सीधा सा अर्थ यह है कि ब्रह्मचारी तीनों लोकों को=संसार के सब लोगों को पालित पोषित और पूरित करता है। सामान्य पाठकों के मन में इस समय एक स्वाभाविक सा प्रश्न उभर सकता है कि ब्रह्मचारी को तो स्वयं ही पालनार्थ किसी अन्य पर निर्भर रहना पड़ता है फिर वह कैसे इतना बड़ा उत्तरदायित्त्व वहन कर सकेगा! उस पर भी कोई साधारण कार्य नहीं, अपितु तीनों लोकों का पालन! यह किस प्रकार से संभव हो सकेगा! इससे पूर्व की इन प्रश्नों की झड़ी आपके मन में लग जाए, हम अथर्ववेद का वह पूरा मंत्र उद्धृत कर रहे हैं, जहाँ से हमने उपयुक्त शीर्षक उठाया है-

इयं समित् पृथिवी द्यौर्द्वितीयोतान्तरिक्षं समिधा पृणाति।
ब्रह्मचारी समिधया मेखलया श्रमेण लोकाँस्तपसा पिपर्ति।।

अथर्व ११/५/४

अर्थात् (इयं समित्) यह पहली समिधा (पृथिवी) पार्थिव जगत् की (द्वितीया) दूसरी समिधा (द्यौः) द्युलोक की, आत्मिक जगत् की (उत) और यह (समिधा) अपनी तीसरी समिधा द्वारा (अंतरिक्षम्) मध्य के मनोमय अंतरिक्ष लोक को (पृणाति) पूर्ण करता है। इस प्रकार (ब्रह्मचारी) ब्रह्मचारी (समिधया) समिधा से त्रिविध दीप्ति से (मेखलया) मेखला से, कटिबद्धता से (श्रमेण) श्रम से और (तपसा) तप से (लोकान्) तीनों लोकों को, संसार के सब लोगों को (पिपर्ति) पालित, पोषित और पूरित करता है।

वेद के इस मंत्र द्वारा ईश्वर ने मानो मनुष्य को एक आधार प्रदान कर दिया जिसके द्वारा वह जहां व्यक्तिगत जीवन को ऊँचा उठा सकेगा, वहीं उसका सामाजिक जीवन भी ऊँचा रहेगा। वह लोक कल्याण के कार्य को भी पूर्ण कर सकेगा, साथ ही वे साधन भी बता दिए जो इस कार्य में उसके सहायक हो सकेंगे। जीवन का वह आधार है- ब्रह्मचर्य। इसके बिना तो व्यक्तिगत जीवन की उच्चता की कल्पना ही नहीं की जा सकती। व्यक्तिगत जीवन का ही उत्थान नहीं है तो सामाजिक जीवन के उत्थान का प्रश्न ही नहीं उठता।

यूं तो ब्रह्मचर्य का रूढ़ि अर्थ वीर्य रक्षा के रूप में लिया जाता है, परंतु इस शब्द को केवल वीर्य रक्षा तक सीमित कर देना इसके साथ अन्याय करना ही होगा। ब्रह्मचर्य का अर्थ है- ब्रह्म+चर्य= ब्रह्म में विचरण करना। चर् धातु के दो अर्थ हैं- गति और भक्षण। अर्थ स्पष्ट हुआ- ब्रह्म में विचरण करने वाला और ब्रह्म का भोजन करने वाला, अर्थात् ब्रह्म=ईश्वर की भूख अर्थात् इच्छा रखने वाला। इस आधार को प्राप्त करके ब्रह्मचारी तीन मेखलाओं का आरोहण करता है। इन मेखलाओं का आरोहण करते समय वह तीन समिधाएं भी चढ़ाता चलता है और प्रत्येक समिधा एक एक लोक को अर्पित होती जाती है। यह कार्य इतना विशाल है, इतना कठिन है कि ब्रह्मचारी को छोड़कर इसे करने में कोई भी अन्य समर्थ नहीं हो सकता।

ब्रह्मचारी को जब आचार्य अपनी शरण में लेता है तो उसे मेखला और दंड धारण कराता है। मेखला कहां धारण की जाती है? कटि प्रदेश में। इसका अर्थ है कि आज से उसे उन महान व्रतों को धारण करने के लिए कटिबद्ध रहना होगा, तत्पर रहना होगा, सावधान रहना होगा, जिन व्रतों के द्वारा वह निम्न अवस्था से मध्यम अवस्था तक और मध्यम से उच्च अवस्था तक पहुंच सकता है। जब तक यह कटिबद्धता न होगी, तब तक वह कुछ भी प्राप्त न कर सकेगा। यज्ञवेदी की तीन मेखलाएं भी तो इसी ओर संकेत कर रही हैं। कटिबद्धता तो प्रत्येक स्थान पर होनी चाहिए ही, इसके अतिरिक्त तीन समिधाएं भी चाहिएँ। इसी के साथ साथ उसे श्रम और तप के कठिन व्रतों को भी धारण करना है। अब आपके मन में कुछ-कुछ चित्र उभर रहा होगा ब्रह्मचारी के उन कार्यों का, जिनके आधार पर उसे तीनों लोकों के पालन पोषण का उत्तरदायित्व सौंपा गया है।

अथर्ववेद के ब्रह्मचर्य सूक्त के मंत्रों में ब्रह्मचारी के गुणों का गान किया गया है। वैसे भी ब्रह्मचर्याश्रम ही सब आश्रमों का आधार है। इसके ठीक से सेवन के बिना शेष तीनों आश्रमों में वांछित सफलता प्राप्त नहीं की जा सकती। जब तक व्यक्ति ब्रह्मचर्याश्रम में कठोर तप का अभ्यास न करेगा तब तक वह जीवन के सुख को भी प्राप्त न कर सकेगा। आचार्य के समीप बैठकर जहां वह विद्यार्जन करेगा, अनुशासित जीवन का पालन करेगा, वहीं यज्ञवेदी पर बैठकर पृथ्वी से अंतरिक्ष और द्युलोक तक उठना सीखेगा। यद्यपि यज्ञ का यह बाह्य अभ्यास है तथापि इसी के अभ्यास से

वह आंतरिक उत्थान करना भी सीख जाता है। स्थूल से सूक्ष्म की ओर बढ़ना ऐसे ही तो सीखना है।

यज्ञ की तीनों में मेखलाएँ ब्रह्म, श्रम एवं तप की प्रतीक हैं। तमहं ब्रह्मणा तपसा श्रमेणनयैनं मेखलया सिनामि। (अथर्व ६/७३३/३) अर्थात् मैं इस मेखला को ब्रह्म के द्वारा, तप के द्वारा, श्रम के द्वारा धारण करता हूँ। वैदिक ऋषियों के चिंतन की भी क्या गाथा गायें! श्रम और तप दोनों ही व्यर्थ हैं यदि वे ब्रह्म से बंधे हुए न हों, इसीलिए सबसे पहले ब्रह्म को रखा गया है। जब वे दोनों कार्य ईश्वर से जुड़े होंगे तो इनमें आस्तिकता का पुट रहेगा जो इनका सेवन करने वाले को सदा यह स्मरण कराता रहेगा कि जो कुछ भी तुम प्राप्त करोगे या अर्जित करोगे उस पर प्राणिमात्र का अधिकार रहेगा। वे सब उपलब्धियाँ सबकी होंगीं। स्वार्थ का लेश मात्र भी उसमें न आ सकेगा।

अब आप भली प्रकार से समझ गए होंगे कि वह तीनों लोकों का पालन किस प्रकार से करता है। आगे और भी अवलोकन कीजिए- सा नो मेखले मतिमा धेहि मेधामथो नो धेहि तप इन्द्रियं च।। (अथर्व ६/११४/४) वह मेखला मेरे अंदर मति और मेधा प्रदान करे तथा इंद्रियों में तप प्रदान करे। मेखलाएँ तो जीवन को उन्नत करके ब्रह्म की ओर ले जाती हैं। प्रथम मेखला ही पुकार पुकार कर कह रही है- पृथिव्या अहमुदन्तरिक्षमारुहम्।। अर्थात् मैं पृथ्वी जो कि मुष्टि प्रमाण अर्थात् पंच भौतिक तत्वों से गठित है, उसके ऊपर के तत्त्वों, ज्ञान विज्ञान को प्राप्त करुँ। यही भूः का स्वरूप है या भूः की स्थिति है। दूसरी स्थिति भुवः की है। अतः दूसरी मेखला संदेश दे रही है- अन्तरिक्षाद्विदिरारुहं।। मैं अंतरिक्ष से फिर द्युलोक को प्राप्त करूँ। इसके उपरांत उसे तीसरी स्थिति स्वः को प्राप्त करना है। अतः तृतीय मेखला फिर कह रही है-दिवो नाकस्य पृष्ठात् स्वर्ज्योति रगामहम्।। द्युलोक से भी परे की स्थिति ज्योति और आनंद की है, मैं उसे प्राप्त करूँ। यह उच्च से उच्चतर और फिर उच्चतम की स्थिति कभी भी बिना समर्पण के नहीं बन सकती। अतः आचार्य के समीप यज्ञवेदी पर बैठकर वह समर्पण को साकार करते हुए एक एक समिधा यज्ञ में अर्पित करता चलता है। प्रत्येक मंत्र के साथ इदं न मम अर्थात् यह मेरे लिए नहीं है, मेरा नहीं है, अपितु यज्ञ बहाने से वह इसे ईश्वरार्पण करता चलता है। इदमग्नये जातवेदसे इदन्न मम।। यह मेरा सारा श्रम, सारा का सारा दान, मेरा सर्वस्व ईश्वर के लिए है, अर्थात् उसी के कार्य के लिए है। यही समर्पण उसे आचार्य के प्रति भी करना है। जब वह अपने आचार्य के प्रति पूर्ण रूप से समर्पित हो जाता है, आचार्य का दर्शन उसका दर्शन हो जाता है, आचार्य का ज्ञान उसका ज्ञान हो जाता है, आचार्य का चिंतन उसका चिंतन हो जाता है, तभी आचार्य की वह प्रतिज्ञा भी पूर्ण हो जाती है जो गुरुकुल में प्रवेश के समय आचार्य ने की थी। वह क्या थी? आचार्य उपनयमानो ब्रह्मचारिणं कृणुते गर्भमन्तः।। अर्थात् आज से मैं तुम्हें अपने गर्भ में धारण करता हूँ।

अपने पास बैठाकर आचार्य अपने ब्रह्मचारी का निर्माण करता चला गया। ब्रह्मचारी पूर्ण समर्पित होकर आचार्य के समीप नतमस्तक रहा। कैसा अद्‌भुत दृश्य था वह! उसने बंद कुटिया का द्वार खटखटाया। अंदर से प्रश्न उभरा था कि कौन है? आगंतुक ने कहा- दयानंदोऽहम्। फिर प्रश्न उभरा क्या चाहते हो? उत्तर दिया कि पढ़ने आया हूँ। अब तक क्या-क्या पढ़े हो? उन्होंने जो पढ़ा था, बतला दिया। अंदर से कठोर स्वर उभरा- हम संन्यासियों को नहीं पढ़ाते। अरे, कौन तुम्हारे रहने का प्रबंध करेगा? याचक कहने लगा कि उसका प्रबंध स्वयं कर लूँगा। स्वर और भी कठोर हो गया- मैं जो कुछ पढ़ाऊँगा, उसे अगले दिन सुनूँगा और यदि नहीं सुना पाए तो उसी दिन छुट्टी समझना। गुरु ने सोचा होगा कि यह शर्त सुनकर यदि भागने वाला होगा तो भाग जाएगा। परंतु यह क्या! उसने तो शर्त स्वीकार कर ली। फिर आदेश हुआ कि ठीक है, पहले जाओ और यमुना में स्नान करके आओ और ये पुस्तकें जो तुम्हारे पास हैं उन्हें भी जल में प्रवाहित कर दो। जिज्ञासु ने वही किया। गुरु के पास आकर पुनः याचना की कि महाराज जैसा आपने कहा था, कर दिया। अब तो द्वार खोल दो। जो अब तक प्रश्न पर प्रश्न किए जा रहा था बोल उठा- द्वार खुला है, भीतर आ जाओ। अहो! वह मंगल मिलन! अहो! ब्रह्मचारी का वह दिव्य समर्पण!! प्रथम परिचय में ही विद्या की वह प्रबल उत्कंठा!! यही तो वे दिव्य गुण थे जिन्होंने स्वामी दयानंद ब्रह्मचारी को ऋषि, महर्षि, युगपुरुष और न जाने क्या-क्या बना दिया। वे समिधा बनकर के गुरु को अर्पित होते गए और गुरु उन्हें एक मेखला से उठाकर दूसरी और तीसरी मेखला तक लेते चले गये। भूः से उठकर भुवः और भुवः से उठकर स्वः तक भी पहुंच गए और फिर उस ब्रह्मचारी ने तीनों लोकों को पालित, पोषित और पूरित करने के लिए जो कुछ किया वह अथर्ववेद के उपर्युक्त मंत्र का मूर्त्त रूप था। उनके जीवन में सबसे प्रमुख ब्रह्म का संग था। श्रम और तप यदि थे तो ब्रह्म के ही संरक्षण में थे, ब्रह्म से ही आबद्ध थे। बिना आत्म बलिदान के यह कार्य कभी संभव न था। लेकिन आत्म बलिदान करता कौन है?

ईश्वर का भक्त ही ऐसा कर सकता है। नास्तिक व्यक्ति कभी भी बलिदान नहीं किया करता है। वह तो

(शेष पृष्ठ ३३ पर)

चित्त की वृत्तियाँ और साधना में बाधाएँ

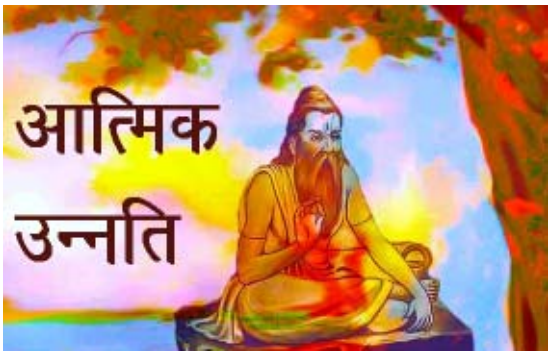

❑हरिवंश वानप्रस्थी
तपोभूमि योगसाधना केन्द्र लोहारी, पानीपत

चित्त से क्लिष्ट वृत्तियों को प्रभावविहीन व क्षय करके अक्लिष्ट वृत्तियों को धारण करना व अभ्यास से इन अक्लिष्ट वृत्तियों को नियंत्रित तथा निरोध अथवा रोकना ही योग का मुख्य उद्देश्य है।

चित्त की वृत्तियाँ तो असंख्य हैं, पर योगदर्शनकार श्री पतञ्जलि ऋषि ने अपने योगदर्शन के समाधि पाद के पाँचवे सूत्र और सांख्य दर्शन के दूसरे अध्याय में महर्षि कपिल ने (तैंतिसवे सूत्र में) चित्त की वृत्तियों को पांच प्रकार की दर्शाया है और हर प्रकार की वृत्ति के दो भेद बताए हैं। **'वृत्तयः पंचतय्य क्लिष्टाऽक्लिष्टा'**।

वृत्तियाँ अर्थात् तरंगें या धाराएँ (निरोध योग्य) पांच प्रकार की हैं और हर प्रकार की वृत्ति के दो भेद या रूप हैं- क्लिष्ट और अक्लिष्ट। जो वृत्तियाँ साँसारिक विषयों में आसक्त और अविद्या, राग, द्वेष आदि क्लेशों में फँसाती हैं वे क्लिष्ट वृत्तियाँ हैं और जो क्लेश रहित अर्थात् अविद्या, राग, द्वेष आदि क्लेशों का क्षय या समाप्त करने वाली हों और प्रभु उपासना और योग साधना में सहायक हों वे अक्लिष्ट वृत्तियाँ हैं। योग साधना से इन अक्लिष्ट वृत्तियों द्वारा क्लिष्ट वृत्तियों को हटायें। इन पांच प्रकार की वृत्तियों में संसार के सब विचार, ज्ञान-अज्ञान, धर्म-अधर्म समाविष्ट हो जाते हैं। यह पांच वृत्तियाँ योगसूत्र अनुसार इस प्रकार हैं:

प्रमाणविपर्यय विकल्पनिद्रास्मृतयः।।

प्रमाण, विपर्यय, विकल्प, निद्रा एवं स्मृति। इन पांच प्रकार की वृत्तियों का वर्णन योग दर्शन के पहले अध्याय के सात से ग्यारह सूत्रों में दिया गया है।

१. प्रथम प्रमाण वृत्ति : यह तीन प्रकार की है। प्रत्यक्ष प्रमाण, अनुमान प्रमाण और आगम (शब्द) प्रमाण।

(क) प्रत्यक्ष प्रमाण : मन, बुद्धि और इन्द्रियों के साथ बिना किसी व्यवधान के संबंध होने से जो संशय रहित ज्ञान होता है, वह प्रत्यक्ष अनुभव से होने वाली प्रमाण वृत्ति है। जिन मनुष्यों को सांसारिक पदार्थ नित्य और सुखरूप प्रतीत होते हैं, उनकी भोगों में आसक्ति हो जाती है, यह प्रमाण वृत्ति क्लिष्ट है और जो संसार में नाशवान् और परिवर्तनशील पदार्थों में दुःख की प्रतीति करता है, इससे सांसारिक पदार्थों से वैराग्य हो जाता है, जो चित्त वृत्तियों के प्रवाह को रोकने में सहायक होती है; वह अक्लिष्ट प्रमाण वृत्ति है। इसी प्रकार दूसरी वृत्तियों में भी क्लिष्ट व अक्लिष्ट समझें।

(ख) अनुमान प्रमाण : किसी प्रत्यक्ष दर्शन के सहारे युक्तियों द्वारा अप्रत्यक्ष पदार्थ के स्वरूप का ज्ञान होता है, वह अनुमान से होने वाली प्रमाण वृत्ति है। जैसे दूर से धुयें को देख कर अग्नि होने का अनुमान।

(ग) आगम प्रमाण वृत्ति : वेद, शास्त्रों और आप्त पुरुषों के वचन को 'आगम' कहते हैं। जो पदार्थ मनुष्य के अन्तः करण और इन्द्रियों के प्रत्यक्ष नहीं हैं एवं जहाँ अनुमान की भी पहुंच नहीं है, उसके स्वरूप का ज्ञान वेद, शास्त्रों और महापुरुषों के वचनों से होता है, वह आगम से होने वाली प्रमाण वृत्ति है।

२. दूसरी विपर्यय वृत्ति : मिथ्या ज्ञान या विपरीत ज्ञान अर्थात् असली स्वरूप को न समझ कर उसको दूसरी ही वस्तु समझ लेना विपर्यय वृत्ति है। जैसे अन्धेरे में पत्थर को रीछ समझ लेना या रस्सी को सांप समझ लेना। यह विपर्यय ज्ञान प्रमाण नहीं है, क्योंकि प्रमाण से खण्डित हो जाता है। सांख्य दर्शन के सूत्र 'विपर्यय भेदाः पंच' के अनुसार विपर्यय अर्थात् मिथ्या ज्ञान के पांच भेद अविद्या, अस्मिता, राग, द्वेष और अभिनिवेश को भी विपर्यय वृत्ति ही दर्शाया है। योग दर्शन के अगले सूत्रों में ये ऐसे क्लेश बताए गए हैं जो कि असम्प्रज्ञात समाधि की योग्यता बिना क्षीण नहीं होते। अतः अविद्या आदि क्लेशों को कई एक महानुभावों ने विपर्यय वृत्ति नहीं माना है। इस बारे विचारों की भिन्नता है।

३. विकल्प वृत्ति : केवल शब्द के आधार पर बिना हुए

पदार्थ की कल्पना करने वाली जो चित्त की वृत्ति है, वह विकल्प वृत्ति है। जैसे किसी ने किसी से कहा कि एक देश में हमने आदमी के सिर पर सींग देखे थे। इस बात को सुनकर कोई मनुष्य निश्चय करले कि ठीक है, सींग वाले मनुष्य भी होते होंगे। ऐसी वृत्ति को विकल्प कहते हैं। इसी प्रकार रूप की कल्पना करके, भगवान का ध्यान करता है। लेकिन जिस स्वरूप का वह ध्यान करता है, उसे न तो देखा है न वेद शास्त्र सम्मत है; केवल कल्पना मात्र ही है। यह विकल्पवृत्ति मनुष्य को भगवान के चिन्तन में लगाने वाली होने के कारण अक्लिष्ट है। जो भोगों में प्रवृत करने वाली हों, वे विकल्प वृत्तियां क्लिष्ट हैं।

४. निद्रा वृत्ति : जो वृत्ति अज्ञान और अविद्या के अंधकार में फँसी हों, उस वृत्ति का नाम निद्रा है। इस वृत्ति में तमोगुण ही प्रधान है। निद्रावृत्ति का भी जाग्रत होने पर विशेष विचार किया जाता है कि आज मैं सुख से सोया, मेरा मन प्रसन्न है या मैं दु:ख से सोया, मेरा मन आलस्य में है। यह अनुभूतियाँ जाग्रत अवस्था में होती हैं। इससे सिद्ध होता है कि निद्रा भी एक वृत्ति है; नहीं तो जागने पर उसकी स्मृति कैसे होती।

५. स्मृति वृत्ति : जिस व्यवहार या वस्तु का अनुभव या प्रत्यक्ष देख लिया है, उसी का संस्कार ज्ञान में बना रहता है, उसका निमित्त पाकर याद आना ही स्मृति है। इस प्रकार पहले वर्णित प्रमाण, विपर्यय, विकल्प और निद्रा, इन चारों प्रकार की वृत्तियों द्वारा अनुभव में आए हुए विषयों के संस्कार जो चित्त में पड़े हैं, उनका पुन: किसी निमित्त को पाकर जाग्रत होना ही स्मृति है।

प्रकृति का नियम ही ऐसा हैं और मानव मस्तिष्क की रचना भी ऐसी ही है कि मनुष्य अपनी इन्द्रियों द्वारा जो देखता, सुनता, सूंघता, चखता और छूता है वह सब मस्तिष्क के स्मृतिकणों पर अंकित हो जाता है। नित्य असंख्य स्मृतिकण बनते रहते हैं, किन्तु पुराना एक भी स्मृतिकण नष्ट नहीं होता। एक एक स्मृतिकण में अनेक दृश्यों, बोलियों, गन्धों, स्वादों और स्पर्शों के चित्र अंकित होते हैं। मन में जिस प्रकार का वेग या संकल्प उठता है, तब उसी विषय के चित्र साकार हो जाते हैं और इन साकार चित्रों के द्वारा भोगे हुये भोगों का स्मरण कर भोग करता है। स्मृतियाँ दो प्रकार की हैं- एक स्मृति विशेष और एक स्मृति शेष। जिस स्मृति से स्मृत विषय के भोगने की इच्छा जागृत होती है उसे स्मृति विशेष कहते हैं। स्मृति विशेष ही विषयों का चिन्तन कराती है। जिस स्मृति से घटना विशेष के कारण किसी भोगे हुए विषय का स्मरण हो तो जाता है, किन्तु स्मृत विषय के भोगने की इच्छा नहीं होती उसे स्मृति शेष कहते हैं। स्मृति विशेष तब ही स्मृति शेष का रूप धारण करती है जबकि साधक साधना द्वारा अपने जीवन में विवेक का दीपक प्रदीप्त करता है।

वृत्तियाँ और संस्कार :- जब तक बुद्धि व्यवहार करती है और निश्चयात्मक ज्ञान व अनुभव नहीं बनता तब तक इसका नाम वृत्ति है। जब इन वृत्तियों की छाप बन कर हृदय (चित्त) पटल पर जा पड़ती है, तब इसका नाम संस्कार है। वृत्तियों का सूक्ष्म रूप में परिणत रूप ही संस्कार है। यह चित्त ही वृत्तियों व संस्कारों का घर है। चित्त से क्लिष्ट वृत्तियों को प्रभावविहीन व क्षय करके अक्लिष्ट वृत्तियों को धारण करना व अभ्यास से इन अक्लिष्ट वृत्तियों को नियंत्रित तथा निरोध अथवा रोकना ही योग का मुख्य उद्देश्य है।

साधक को यह भी विचार कर लेना चाहिये कि यदि हम इन चित्त की वृत्तियों को रोकने के लिए योग का अभ्यास करते रहें तो हमारे सामने कौन-कौन सी रुकावटें या विघ्न आएँगे जिनका हमको दृढ़ता से सामना करना होगा।

योगदर्शन के पहले अध्याय के तीसवें सूत्र के अनुसार चित्त के नौ विघ्न हैं- **व्याधिस्त्यानसंशयप्रमादाऽऽलस्याऽविरतिभ्रान्तिदर्शनाऽलब्धभूमिकत्वाऽनवस्थितत्वानि चित्तविक्षेपास्तेऽन्तराया:।। १-३०**

योग साधना में रुकावटें :

संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है-

१) व्याधि : वात, पित्त, कफ, धातुओं का बिगड़ जाना और खाए-पिए आहार के रस की विषमता व इन्द्रियों की विषमता।

२) स्त्यान : अकर्मण्यता अर्थात् जी चुराना, साधन में रूचि न होना।

३) प्रमाद : योगसाधना की अवहेलना करना, लापरवाही।

४) आलस्य : तमोगुण की अधिकता से भारीपन होना, प्रवृत्ति न लगाना।

५) संशय : अपनी शक्ति, योग के फल में संदेह होना, दुविधा होना।

६) अविरति : विषयों के साथ इन्द्रियों का संयोग होना जिससे चित्त भ्रांति में होना, वैराग्य भाव कम होना।

७) भ्रांतिदर्शन : योग के साधन को विपरीत समझना और मिथ्या ज्ञान होना।

(शेष पृष्ठ ३३ पर)

स्वास्थ्य चर्चा

डिप्रेशन और आयुर्वेद-२

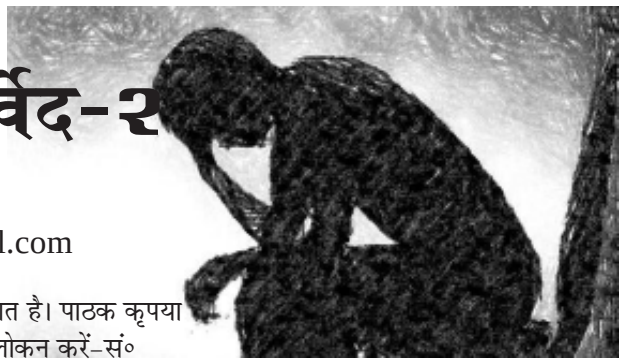

❑**संजय कुमार** कुरुक्षेत्र
kumarsanjay55555@gmail.com

इस क्रम का पूर्व लेख जनवरी २०१९ के अंक में प्रकाशित है। पाठक कृपया पूर्ण संदर्भ को जानने के लिये उक्त अंक का अवलोकन करें-सं०

डिप्रेशन, डिस्लेक्सिया, सिजोफ्रेनिया आदि रोगों को आयुर्वेद में अतत्वभिनिवेश नाम से अभिहित किया गया है। इसकी चिकित्सा में मेध्य औषधियों का विधान किया गया है। लेख के इस भाग में हम डिप्रेशन की आयुर्वेदिक औषधियों के विषय में लिखेंगे।

आयुर्वेदिक चिकित्सा की विशेषता-

डिप्रेशन लम्बे समय तक चलने वाली अवस्था है। आधुनिक चिकित्सा पद्धति में दी जाने वाली सभी मनो क्रियाशील (Psychoactive) औषधियां उग्र अवांछित प्रभाव (Serious side effects) उत्पन्न करती हैं। इनके नियमित प्रयोग से मनोदैहिक (Psychosomatic) कार्य कुशलता की हानि होती है। आयुर्वेदिक औषधियों के दीर्घकालीन प्रयोग से शरीर और मस्तिष्क की क्षमता में वांछित सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। निम्नलिखित उपाय अनेक बार प्रयोग किए हैं और अधिकांशत: सफल रहते हैं। इनका प्रयोग करने से पहले ध्यान रखें- यदि अवसाद ग्रस्त रोगी अत्यन्त विचलित हो, आत्महत्या की कोशिश करे या दैनिक कार्य जैसे नहाना, मलमूत्र त्याग में असामान्य व्यवहार करे तो उसकी चिकित्सा विशेषज्ञ से ही करवाएं।

एकल औषधि-

१-शंखपुष्पी- इसे मेध्य (बुद्धिवर्धक), मस्तिष्क शामक एवं नाड़ी दौर्बल्य में मुख्य औषधि माना गया है। चरक संहिता में 'मेध्या विशेषेण च शंखपुष्पी' लिखते हुए कहा है-'स्मरण शक्ति को बढ़ाने वाली औषधियों में शंखपुष्पी प्रधान है।' भाव प्रकाश के अनुसार यह मेधावर्धक, मानस रोगहन अपस्मारहन (एण्टीइपीलैप्टिक) भूतघ्न तथा विषहन है। राजनिघण्टुकार लिखते हैं-'ग्रहभूतादिदोषहनी वशीकरण सिद्धिदा' अर्थात् यह भूत रोग (हिस्टीरिया) मिटाकर व्यक्ति की मेधा में वृद्धि कर उसके व्यक्तित्व को सम्मोहक बनाती है। लेखक ने इसे अनिद्रा के लिए सर्वश्रेष्ठ औषधि माना है। निघण्टु रत्नाकर ने भी इसे मेधा, स्मृतिवर्धक, कान्तिदायक, तेज बढ़ाने वाली एवं मस्तिष्क दोषहर माना है। वनौषधि चन्द्रोदय के अनुसार शंखपुष्पी से मस्तिष्क को शांति व शक्ति मिलती है। विश्लेष्णात्मक बुद्धि बढ़ती है। विशेषकर मस्तिष्कीय कार्य अधिक करने वालों के लिए यह एक बलवर्धक टॉनिक है, जो सीधे स्नायु कोषों को प्रभावित करता है। शंखपुष्पी जड़ी बूटी की दुकान से आसानी से मिल जाती है। इसे किसी भी तरह प्रयोग करें, लाभ अवश्य होगा। लम्बे समय तक प्रयोग करने से स्थाई लाभ होता है।

प्रयोग विधि :- शंखपुष्पी चूर्ण १ चम्मच २ समय दूध से लें। बाजार में मिलने वाली शंखपुष्पी सिरप अधिक प्रभावी नहीं है।

२-मालकांगनी :-

बाजार में यह बीज के रूप मे मिलती है। इसका प्रयोग केवल सर्दी में ही करें। गर्मी में यह हानिकारक है। डिप्रेशन जैसे मानसिक रोगों में इसका बहुत अच्छा प्रभाव है। डिप्रेशन जैसे अनेक मानसिक रोगो में मालकंगनी से तत्काल लाभ होता है। मनोरोग की आधुनिक दवाइयाँ प्राय: नींद को बढ़ाती हैं, परंतु यह नींद को सामान्य ही रखती है। सभी साइकोएक्टिव दवाइयाँ (मानसिक रोगों की आधुनिक दवाइयाँ) सुस्ती लाती हैं, आँख, कान की शक्ति को कम करती हैं, कमजोरी लाती हैं और खून की कमी कर देती हैं; परंतु इसमें ऐसी कोई समस्या नहीं है। इसका प्रभाव बढ़ाने के लिए इसके साथ-साथ शंखपुष्पी चूर्ण का प्रयोग किया जा सकता है।

प्रयोग विधि :- मालकांगनी के बीज लाकर साफ करके पीस लें। १ ग्राम २ समय दूध से लें। मालकंगनी पर पिछले अंकों में विस्तृत लेख छप चुका है। (अक्तू० नव० २०१८)

३-ब्राह्मी-

ब्राह्मी नाम से बाजार में कई जड़ी बूटियां मिलती हैं, जिनमे Centella asiatica ही वास्तविक ब्राह्मी है। क्योंकि जड़ी बूटी बेचने वाले ब्राह्मी नाम से अलग-अलग जड़ी बूटियां देते हैं इसलिए ब्राह्मी का लाभ अनिश्चित है। दूसरा कारण यह है कि केवल छाया में सुखाई गई ब्राह्मी ही

गुणकारी है; इसलिए ताजी ब्राह्मी मिलने पर उसका रस लें व छाया में सुखा कर उसे प्रयोग करें। सुखा कर पीस लें। १ चम्मच ब्राह्मी चूर्ण गुनगुने दूध से २ समय लें। ब्राह्मी घृत और सारस्वतारिष्ट भी ब्राह्मी से बनते हैं। इनका भी प्रयोग करना चाहिए।

४-कौंच बीज :-

सफेद कौंच के बीज बाजार में आसानी से मिलते हैं। कौंच के बीज को केवल बलवर्धक औषधि के लिए प्रयोग किया जाता है, परन्तु इसका मानसिक प्रभाव अद्वितीय है। चूहों पर किए गए वैज्ञानिक अध्ययनों से सिद्ध हुआ है कि कौंच से मष्तिष्क में Dopamine (डोपामिन) नामक रसायन का स्राव अधिक बढ़ जाता है। डोपामिन वह द्रव है जो हमें खुशी देता है। जब भी हम उदास होते हैं तो मस्तिष्क में डोपामिन का स्राव कम हो जाता है। इसके दीर्घकालीन प्रयोग से नशे की आदत को भी छुड़ाया जा सकता है। इसलिए जब तन और मन दोनों थके हुए हों तब कौंच का प्रयोग शीघ्र लाभ देता है। कौंच के बीजों का प्रयोग सावधानी से करना चाहिए। प्रयोग से पहले इनका छिलका दूर करना चाहिए। छिलका दूर करने के २ उपाय हैं। कौंच बीजों पर लकड़ी से हल्की चोट मारने से छिलका अलग हो जाता है। दूसरा तरीका है कि इन्हें रात भर गर्म पानी में भिगो दें। सुबह छिलका हटा कर सुखा लें। छिलका हटाए हुए सूखे बीजों को पीस कर पाउडर बना लें। आधा से १ चम्मच २ समय गर्म पानी या गर्म दूध से लें। इसके प्रयोग से डिप्रेशन में बहुत जल्दी लाभ मिलता है।

५-जटामांसी :

यह हिमालय पर मिलने वाले पौधे की सुगन्धित जड़ है, जो देखने में बालों के गुच्छे की तरह दिखाई देती है। जड़ी बूटी की दूकान से आसानी से मिल जाती है। पुराने व जटिल मनोरोगों के लिए विशेष प्रभावी है। हिस्टीरिया, स्मरण शक्ति की कमी, मानसिक श्रम और चिन्ता से होने वाली व्याकुलता पर यह प्रभावशाली है। इसका लाभ तभी होता है जब यह पुरानी न हो और इसमें सुगंध आती हो।

प्रयोग विधि- जटामांसी का टिंक्चर १० बूंद २ समय या जटामांसी चूर्ण २ ग्राम २ समय या ५ ग्राम जटामांसी १ कप पानी में चाय की तरह उबालकर छानकर २ समय पिएँ।

इसके अतिरिक्त मुलहठी, अश्वगंधा और शतावरी भी डिप्रेशन पर प्रभावशाली हैं।

मिश्रित औषधियां-

क्योंकि मिश्रित औषधियों में अनेक जड़ी बूटी मिली होती हैं, इसलिए इनका प्रभाव भी अधिक होता है। ये बाजार में सरलता से मिल जाती हैं। इनका प्रभाव आधुनिक

आयुर्वेदिक औषधियों के दीर्घकालीन प्रयोग से शरीर और मस्तिष्क की क्षमता में वांछित सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

चिकित्सा पद्धति की औषधियों के समकक्ष होता है, परन्तु उनके समान दुष्प्रभाव नहीं होते। पुराने और जटिल रोगों में भी इनका प्रभाव दिखाई देता है।

१-महापंचगव्य घृत- मनोरोगों में इसके समान प्रभावी औषधियां बहुत कम हैं। यह उन स्थितियों में भी चमत्कार दिखाती है जब मनोरोगी आत्महत्या की इच्छा प्रकट करता है। जब व्यक्ति मनोरोग के कारण चिड़चिड़ा (Hyperactive) हो जाता है, बिना किसी कारण से बोलता रहता है (melancholia), खुद से बात करता रहता है, काल्पनिक छवियों को देखता है; तब यह सफल औषधि है। वृद्धावस्था में जब मानसिक संतुलन विकृत हो जाता है, तब भी इसके प्रयोग से अवश्य लाभ होता है। चरक संहिता में भी महर्षि पुनर्वसु आत्रेय ने अतत्वभिनिवेश (Psychological Disorders) की मुख्य औषधि बताया है। इसे दक्षिण भारत की अधिकाँश आयुर्वेदिक फार्मेसियाँ बनाती हैं। अनेक गौशालाएं भी इसका निर्माण करती हैं। ध्यान रहे, इस दवाई में गौमूत्र की अप्रिय गंध आती है।

प्रयोग विधि- महापंचगव्य घृत के डिब्बे को गर्म पानी में रख कर पिघला लें। २ चम्मच दिन में १ बार शाम के समय गर्म पानी से ले। दूध से न लें। दूध से लेने से बहुत कम लाभ होता है।

२-ब्राह्मी घृत- यह सरलता से बाजार में मिल जाता है। यह भी अवसाद पर प्रभावी है। स्मरणशक्ति बढ़ाता है।

प्रयोग विधि- ब्राह्मी घृत के डिब्बे को गर्म पानी में रख कर पिघला लें। २ चम्मच दिन में १ बार शाम के समय गर्म पानी से लें।

३-अश्वगन्धारिष्ट : मानसिक व शारीरिक थकावट, उत्साहहीनता, कमजोरी और अवसाद में प्रभावी है। २ चम्मच बराबर पानी मिलाकर भोजन के बाद २ समय लें।

४-सारस्वतारिष्ट- मानसिक थकावट, उत्साहहीनता, स्मरण शक्ति की कमी और अवसाद में प्रभावी है। २ चम्मच बराबर पानी मिलाकर भोजन के बाद २ समय लें।

५-बलारिष्ट- अनिद्रा, मानसिक व शारीरिक थकावट, उत्साहहीनता और अवसाद में प्रभावी है। २ चम्मच बराबर पानी मिलाकर भोजन के बाद २ समय लें।

अन्य औषधियाँ= नागार्जुनाभ्र रस, ब्राह्मी वटी, चंद्रोदय वटी, शंखपुष्पी वटी, मानसमित्र वटी व मेधा वटी भी अवसाद में लाभकारी हैं।

जानते हो!

❒कीर्ति कटारिया

- हम दिनभर में २५ हजार बार पलकें झपकाते हैं।
- झींगा मछली का खून नीले रंग का होता है।
- मधुमक्खी को आधा किलो शहद एकत्रित करने के लिए २० लाख फूलों पर जाना पड़ता है।
- सामान्यत: मनुष्य के सिर में एक लाख ३० हजार से एक लाख ५० हजार बाल होते हैं। एक युवा आदमी के पूरे शरीर पर ३० लाख बाल एवं चेहरे पर ३० हजार बाल होते हैं।
- मनुष्य साधारण रूप से १०,००० तरह की सुगंधों में अंतर बता सकता है।
- विश्व में २७९२ भाषाएं बोली जाती हैं।
- आवाज की गति एक मिनट में १२ मील है।
- मनुष्य का मस्तिष्क कम्प्यूटर से एक लाख गुणा ज्यादा जानकारी रख सकता है।

☺☺☺हास्यम्☺☺☺

प्रस्तुति : आस्था सोनी

☯आदित्य- अच्छा हुआ मैं जापान में पैदा नहीं हुआ!
आसु - क्यों?
आदित्य-क्योंकि मुझे जापानी भाषा तो बोलनी ही नहीं आती।

☯अध्यापक (अनु से) दो दूनी?
अनु- (धीरे से) चार--
अध्यापक- जोर से बोलो--
अनु- जय माता दी।

☯'डाक्टर साहब, कभी-कभी तो मुझे सोते समय इतने जोर से खर्राटे आते हैं कि मैं खुद अपनी आवाज से ही जाग जाता हूँ।'
'तो मेरी राय में तुम दूसरे कमरे में सोया करो।' डाक्टर ने सलाह दी।

☯रोगी- जी, मुझे खाना खाने के बाद भूख नहीं लगती।
डाक्टर- ये दो गोली ले जाओ। एक सोने के बाद खा लेना और एक जगने से पहले।

☯एक व्यक्ति (डाकिए से)- मेरा पत्र दीजिए।
डाकिया-आपका नाम क्या है।
व्यक्ति- अब मैं अपना नाम क्या बोलूं। अच्छा नहीं लगता। देख लीजिए उसी पर लिखा होगा।

☯ पिता - रवीश आज का पेपर आसान था या मुश्किल?
रवीशा- पिता जी, प्रश्न तो बहुत आसान थे पर उनके उत्तर बहुत मुश्किल थे।

बाल वाटिका

प्रहेलिका:

❒अनुव्रत आर्य

तीन अक्षर का मेरा नाम,
जल में ही है मेरा धाम।
अन्त कटे तो 'कम' बन जाऊँ,
मध्य कटे तो 'कल' कहलाऊँ।।

कलगी सजती सिर पर मेरे,
लंबे सुन्दर पंख घनेरे।
बादल गरजें नाच दिखाऊँ।
मीठा मीठा गान सुनाऊँ।।

गड़ गड़ मैं हूँ शोर मचाता।
हवा का घोड़ा मुझे दौड़ाता।।
पानी दे मैं प्यास बुझाता।
मैं ही तो हरियाली लाता।।

दिन भर चलता रहता हूँ,
फिर भी चल नहीं पाता हूँ।
खुद को भूखा रखकर मैं,
सबको हवा खिलाता हूँ।।

कमल, मोर, बादल, पंखा

विचार कणिका:

❒प्रतिष्ठा

❖मनुष्य अपनी बड़ाई पर अभिमान करता है तो पशु अपने अपने गुणों का वर्णन करके उसे हरा देते हैं।
❖घृणा ऐसा दुर्गुण है जिससे हमें कुछ नहीं मिलता।
❖प्रेम से प्रेम और घृणा से घृणा उत्पन्न होती है।
❖जब तक मनुष्य ज्ञान की दीप जलाने का स्वयं भागीरथ प्रयास नहीं करता और ज्ञान को प्राप्त कर उस पर आचरण नहीं करता तब तक देवता भी उसकी सहायता नहीं करते।
❖भोगों का पुजारी कठिनाईयों में इस तरह बह जाता है जैसे रेत का ढेर बाढ़ आने पर पानी में बह जाता है, किन्तु तपस्वी चट्टान की भाँति अडिग रहता है।
❖ धनी बनना हो तो मन, वचन, कर्म से चोरी न करें।
❖ सुख-दु:ख तो हमारी अपनी ही प्रतिध्वनि हैं। सुख देने से सुख मिलता है और दु:ख देने से दु:ख।

बड़ा कौन?

शंका समाधान के लिए कुछ लोग महर्षि दयानन्द की कुटिया पर पधारे। महर्षि ने सबका यथोचित स्वागत किया और प्रेमपूर्वक बैठने के लिए कहा। उनमें एक छोटू गिरी नाम का आदमी था। वह बोला- हम तो वहाँ बैठेंगे, जहाँ आप बैठते हैं।

इस पर महर्षि ने अपना आसन उसके लिए खाली कर दिया। सब के बैठ जाने पर पास ही वृक्ष पर बैठा हुआ एक कौआ कांव कांव करने लगा। इससे सब लोगों का ध्यान उधर चला गया। कौए की ओर संकेत करके महर्षि ने छोटूगिरी को कहा-

'देखो, वह कौआ बैठा है। क्या ऊँचे स्थान पर बैठने मात्र से ही वह मेरी और आपकी अपेक्षा श्रेष्ठ माना जा सकता है?'

ऊँचा बैठे ऊँचा नहीं, ऊँचा गुण से होय।
कौआ बैठे वृक्ष पर तो क्या खगपति होय।।
बुराई कर बुरा बन जा भलाई कर भला बन जा।
है दोनों तेरे हाथों में बुरा बनना भला बनना।।

देश का सम्मान

प्रसिद्ध साहित्यकार काका कालेलकर उन दिनों जापान-यात्रा पर थे। रास्ते में उन्होंने फुटपाथ पर पुरानी किताबें बेचने वाले लड़के को देखा। उन्हें एक किताब पसंद आई। वह सस्ते मूल्य की थी सो खरीद ली।

इसके बाद लड़के को जैसे कुछ याद आया। उसने काका कालेलकर को एक क्षण ध्यान से देखा और निश्चय करके पूछा- 'आप तो कोई विदेशी मालूम पड़ते हैं। शायद भारतीय हैं। किताब वापस कीजिए। मैं इतने ही पैसों में दुकानदार से नई किताब लाकर आपके होटल में पहुंचा दूंगा।''

काका ने आश्चर्य से पूछा,''तुम लाभ क्यों छोड़ते हो और इतनी दौड़धूप का क्या कारण है?''

लड़के ने सहज उत्तर दिया,''मैं नहीं चाहता कि जापानियों के अतिथि-सम्मान पर कोई संदेह करे। सद्व्यवहार के अभाव में जापान की विदेशों में बदनामी जो होगी।''

-दीपक कुमार दीक्षित

दिशाओं को प्रणाम

एक आदमी सभी दिशाओं को प्रणाम कर रहा था। यह साधना की मुद्रा मानी जाती है। एक जिज्ञासु साधक ने पूछा- यह तुम क्या कर रहे हो? उसने कहा यह हमारे धर्म का विधान है। किसलिए करते हो? जिज्ञासु ने पूछा। 'यह तो मुझे पता नहीं।' जिज्ञासु ने बात को बढ़ाया- आप अपने पड़ौसियों के साथ कैसा व्यवहार करते हो? उसने कहा कभी अच्छा तो कभी बुरा भी कर लेता हूँ। 'क्या आप अपने मित्रों के साथ लड़ाई करते हो?' 'हाँ कभी कभी लड़ाई भी कर लेता हूँ।' 'तो कोरा दिशाओं को नमस्कार करने से क्या लाभ?' उसने पूछा- क्या आप इसके रहस्य को जानते हैं? साधक ने कहा- पूर्व दिशा को प्रणाम करने का अर्थ है हम अपने पूर्वजों के बताए हुए अच्छे मार्ग पर चलें, पूर्वजों का सम्मान करें। पश्चिम दिशा में नमस्कार का अर्थ है हम अपने अनुगामियों का भी सम्मान करें। दक्षिण में नमस्कार करने का अर्थ है- अपने गुरु का सम्मान करें और उनके आदेशों का पालन करें। उत्तर दिशा में नमन् का अर्थ है अपने मित्रों के साथ सद्व्यवहार करें। ऊँची दिशा को नमन का अर्थ है अपने धर्मगुरुओं का आदर करें। आचार्यों का सम्मान करें। नीची दिशा को नमस्कार का अर्थ है अपने नौकर चाकरों और दीन दुखियों का सम्मान करें। दिशाओं को प्रणाम करने वाले ने कहा- अब मैं इन सभी का सम्मान किया करूँगा। (ईश्वरार्य)

देश गान

भारत माता

रोज हवा का पहला झोंका हमको यह बतलाता है।
हम बेटे हैं जिसके सबकी माता भारत माता है।।

रोज सुबह सूरज की किरणें जब धरती पर आती हैं।
देव लोक से यही संदेशा हमको आन सुनाती हैं।।
सब नातों से ऊँचा जग में मां बेटे का नाता है।।१।।
हम बेटे हैं जिसके सबकी माता भारत माता है।।

रोज हिमालय के आंगन से आती यह आवाज है।
देव धरा यह भारत माता दुनिया की सरताज है।।
इसीलिए तो देश हमारा जगतगुरु कहलाता है।।२।।
हम बेटे हैं जिसके सबकी माता भारत माता है।।

रोज सुबह सागर की लहरें आकर शीश झुकाती हैं।
इसके चरणों को धोती हैं धन्य धन्य हो जाती हैं।।
रोज समर्पित अपनी भारत मां के शीश झुकाता है।३
हम बेटे हैं जिसके सबकी माता भारत माता है।।

भजनावली

देख दया उस परमेश्वर की जिसने जगत् रचाया।
पत्ता पत्ता समझाता तेरे नहीं समझ में आया।।

रोज सवेरे सूरज निकले किसने आग लगाई।
सर्दी गरमी बारिश और ये किसने बसंत बनाई।।
चांद सितारे घड़ दिए किसने किसने धरण रचाई।
गर अब भी ना समझा तो फिर तेरी समझ है भाई।।
वृक्ष बीज में, बीज वृक्ष में, दीखे नहीं दिखाया।।१।।

सुख तो तू भोग्या चाहवै पर दुःख ना भोगना चाहता।
कौन भला हत्या करकै खुद फांसी पर चढ़ जाता।।
न्याय व्यवस्था से ईश्वर अपनी शक्ति दिखलाता।।
सुख दुःख भोग रहे हैं प्राणी कौन इन्हें भुगवाता।
जिसने जैसा कर्म किया है वैसा ही फल पाया।।२।।

है तेरा स्वभाव तू खाता, पीता है, सोता है।
सुख में तू खुश हो जाता है, दुःख मिलते रोता है।।
पर नैमित्तिक ज्ञान सिखाए बिना नहीं होता है।
मात पिता और गुरुजनों का आभारी होता है।।
मात-पिता, गुरुओं, ऋषियों को किसने ज्ञान बताया।।३।।

नजर ठीक कर कण कण में तुझे ईश नजर आवैगा।
गहरे पानी पैठेगा जो वो मोती पावैगा।
उसकी रचना देख रचयिता सारी समझावैगा।
चित्त की वृत्ति रोक शोक का सागर तर जावैगा।।
बिना किये **सहदेव** किसी ने दुनिया में क्या पाया।।४।।

बैर विरोध बढ़ा आपस में मत झगड़े टंटे ठाओ।
सुख से रहने की खातिर ये मानवता अपनाओ।।

मानव के मानव बनते ही मिटे सकल अँधियारी।
देखन का ना पावेगा कोई डाकू, चोर, जुवारी।
१८ साल की जवान लड़की ब्याही हो या कंवारी।
कहीं अकेली फिरो घूमती लेकर स्वर्ण पिटारी।
उनको बेटी बहन कहें सब वह विद्वान बनाओ-१

श्रीराम सुरूपनखा को रहे बार-बार समझाते।
सहजराम सुमरू बेगम को अपनी मात बताते।
दुर्गादास लख गुलेनार को पलक तलक ना ठाते।
मां, बेटी और बुआ बहिन के हुआ करें थे नाते।।
आर्य वीरों घर-घर में अब वह बलवान बनाओ-२

परमपिता जगदीश्वर जिसने ये सब सामान बनाया।
कैसे सुन्दर हाथ, पांव ये मुख और कान बनाया।
सर्वश्रेष्ठ मानव चोला दे हमें इंसान बनाया।
नहीं किसी को हिन्दू और ना मुसलमान बनाया।
एकान्त ठौर में बैठे आप थोड़ा अनुमान लगाओ-३

'श्रीपाल' प्रचारी घर-घर बजे आनंद का बाजा।
चरणसिंह सा नेता गर यहाँ फेर दोबारा आजा।
चरणसिंह दुखिया लोगों की सारी पीर मिटाजा।
कृषक और मजदूरों को ये जिन्दगी फिर से भाजा।।
वह कह देगा अखण्ड फिर से हिन्दुस्तान बनाओ-४

महाशय श्रीपाल आर्योपदेशक वैदिक मिशनरी
आर्य भवन-खेडा हटाना (बागपत) उ० प्र०

वेद मुक्ति का द्वार है

वेद मुक्ति का द्वार है, जिसका इससे प्यार है।
उसका बेड़ा पार है वो चार पदार्थ पा लेगा।।टेक।।
वेद ईश्वरीय ज्ञान अनादि नित्य नाश नहीं होता है।
उसका उसमें लीन रहे जब जग प्रलय में सोता है।
जब प्रलय का नाश हो और रचना की आश हो।
वेदों का प्रकाश हो, जो योग्य है वो अपना लेगा।।१।।

अग्नि वायु आदित्य अँगिरा हों ऋषियों के नाम सदा।
जिनके ऊपर हों प्रकाशित वेद मुक्ति के धाम सदा।।
जिनकी पवित्र आत्मा, दोष रहित धर्मात्मा।
परमपिता परमात्मा उसको ज्ञान सिखा लेगा।।२।।

जिसने इनसे वेद पढ़े उसका नाम होता ब्रह्मा।
ज्ञान और विज्ञान के वेत्ता ब्रह्मर्षि विश्वकर्मा।।
फिर सबने अपना लिया पुस्तकाकार बना लिया।
जिसने इसको पा लिया वो आवागमन मिटा लेगा।।३।।

ईशसृष्टि और जैवी सृष्टि जिसने इनको जान लिया।
ईश्वर जीव और प्रकृति इन तीनों को पहचान लिया।।
वो पूरा विद्वान् है, उसका ही कल्याण है।
योगी यति महान् है वो सबके बन्ध छुड़ा लेगा।।४।।

जितनी वस्तु भूगोल में हैं सब वेद बताता है।
किससे क्या उपयोग है लेना ये सब वेद सिखाता है।
जिसने इनको पास किया और योग अभ्यास किया।।
तीन दुःखों का नाश किया-वह परम गति को पालेगा।।५।।

वैदिक धर्म अनादि है ये और मजहब दिन थोड़े के।
जैनी बौद्ध ईसाई मुस्लिम ये कहाँ इसके जोड़े के।।
बाईबिल और कुरान हैं, इनके रचिता इन्सान हैं।
'भीष्म' के भाव महान् हैं जो भजन समझकर गालेगा।।६।।

स्वामी भीष्म जी

शांतिधर्मी परिसर में मनाया गया होली महोत्सव

होली है सांस्कृतिक और सामाजिक धरोहर : सहदेव शास्त्री

जींद, नरवाना मार्ग स्थित शांतिधर्मी परिसर में नव शस्येष्टि होली पर्व पूर्ण वैदिक रीति से हर्षोल्लास से मनाया गया। इस अवसर पर ९ किलोग्राम शुद्ध घी से हवन किया गया। हवन में विशेष रूप से निर्मित औषधीय सामग्री की आहुतियाँ दीं गईं। हवन के ब्रह्मा आचार्य सुनील शास्त्री जी ने विशेष वेद मंत्रों से यज्ञ सम्पन्न कराया। इस अवसर पर वैदिक विद्वान् सहदेव शास्त्री ने कहा कि होली भारत का सांस्कृतिक एवं सामाजिक पर्व है। हमारे उत्सवों में पर्यावरण शुद्धि का ध्यान रखा जाता है। अग्नि में शुद्ध पदार्थों की आहुति देने से वातावरण के विषाक्त रोगाणुओं का नाश होता है। हवन बांट कर खाने की संस्कृति का प्रतीक है। हमारी कृषि संस्कृति में नई फसल आने पर उत्सव मनाया जाता है। इससे समाज में भाईचारा बढ़ता है और सब प्रकार के भेदभाव समाप्त होते हैं। उन्होंने कहा कि सुख में हवन करने से सुख बहु गुणा हो जाता है और दुःख में हवन करने से दुःख आधा हो जाता है। आचार्य सुनील शास्त्री ने भजनोपदेश के माध्यम से कहा कि सभी मनुष्यों को धर्म के मार्ग पर चलना चाहिए और पाप के मार्ग से बचना चाहिए। कुमारी सुमेधा, प्राची और प्रीति ने भावपूर्ण भजन सुनाए। कुमारी प्रतिभा आर्या ने होली के रंगों को शहीदों के बलिदान से जोड़ते हुए अपनी कविता के माध्यम से श्रोताओं को भावविभोर कर दिया। सभा को मा० जगदीश सिन्धु, सूरजमल जुलानी, विनीता गुलाटी, महेन्द्रपाल, हर्षित आर्य ने भी संबोधित किया। चार यजमान दम्पतियों सर्वश्री डॉ० अश्विनी कुमार-डॉ० शीला देवी, रवीन्द्र आर्य-कमलेश देवी, पवनदीप तंवर- शारदा तंवर, सत्यव्रत आर्य-शारदा आर्या का सम्मान किया गया। मास्टर जगदीश चन्द्र द्वारा प्रकाशित पुस्तक हवन पद्धति का विमोचन मास्टर सतबीर जुलानी एवं मा० पृथ्वीसिंह मोर ने किया। यह पुस्तक श्रद्धालुओं को निःशुल्क वितरित की गई। हवन के लिये श्रीमती सुमन मान, प्रिं० राजकुमार वर्मा, डॉ० शिवप्रकाश सैनी, श्री जयप्रकाश ने एक एक किलोग्राम और अन्य दर्जनों परिवारों ने यथाशक्ति घी प्रदान किया। हवन-सामग्री, घृत, समिधा और नवान्न के रूप में २२-२२ परिवारों की भागीदारी इस पर्व की अन्यतम विशेषता थी। मुख्य रूप से महासिंह नैन, जयदेव मित्तल, विजयपाल आर्य, सत्यवान शास्त्री, विक्रम शास्त्री, आचार्य मनजीत शास्त्री, सतबीर अहिरका, अशोक आर्य, गणेशन पालीवाल, दर्शना आर्या, निर्मल सैनी, वीना आर्या, कैलाश बूरेवाला, रितु चहल, आस्था आर्या, आदित्य प्रकाश, रवीश सोनी, रमेश देवी, प्रतिष्ठा आर्या, आस्था, मानवी तंवर सहित सैंकड़ों गणमान्यों ने आहुतियाँ प्रदान कीं।

फार्म - IV (देखिए नियम-8)

प्रकाशन का नाम : शांतिधर्मी
प्रकाशन का स्थान : जीन्द (हरियाणा)
प्रकाशन की अवधि : मासिक
मुद्रक का नाम : सहदेव
राष्ट्रीयता : भारतीय
पता : 756/3, आदर्श नगर, सुभाष चौक (पटियाला चौक) जीन्द
प्रकाशक का नाम : सहदेव
राष्ट्रीयता : भारतीय
पता : 756/3, आदर्श नगर, सुभाष चौक (पटियाला चौक) जीन्द
सम्पादक का नाम : सहदेव
राष्ट्रीयता : भारतीय
पता : 756/3, आदर्श नगर,सुभाष चौक (पटियाला चौक) जीन्द

उन व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचार पत्र की कुल पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक के हिस्सेदार हैं।

सहदेव
756/3, आदर्श नगर,
सुभाष चौक (पटियाला चौक) जीन्द

मैं सहदेव एतद् द्वारा घोषणा करता हूं कि उपर्युक्त प्रविष्ठियां मेरी अधिकतम जानकारी और विश्वास से सत्य हैं।

सहदेव
प्रकाशक के हस्ताक्षर

ओ३म्
शांतिधर्मी परिसर नरवाना मार्ग जींद में
(निकट शिव धर्मशाला)

पूर्णिमा यज्ञ निमन्त्रण

19 अप्रैल 2019 शुक्रवार सायं 4 बजे

आप सपरिवार सादर आमन्त्रित हैं।

❖यज्ञ ❖भजन ❖अध्यात्म चर्चा

निवेदक : वैदिक प्रचार समिति

सम्पर्क : 9996338552, 9896412152, 9416253826

हमारे कुछ महत्त्वपूर्ण प्रकाशन

आर्यों की गोत्र परम्परा का वैज्ञानिक विश्लेषण

लेखक : महीपाल आर्य
पृष्ठ : ४८
मूल्य २० /- लागत मात्र

भारत एक खोज हमने क्या खोजा? भारत या इण्डिया

लेखक : राजेशार्य आट्टा
पृष्ठ : ९०
मूल्य ४० /- लागत मात्र

बुद्ध शिक्षा एवं वैदिक धर्म

लेखक : हरिवंश वानप्रस्थी
पृष्ठ : ८८
मूल्य लागत मात्र २०/-

देव गीत

(स्तुति, प्रार्थना और प्रेरणा गीतों का अनुपम संग्रह)

लेखक : सहदेव समर्पित
पृष्ठ : ५०
मूल्य २०/- लागत मात्र

चारों पुस्तकों का मूल्य एक सौ रुपये अग्रिम भेजकर पंजीकृत डाक से मंगावें।

प्राप्ति स्थान : शांतिधर्मी कार्यालय, पोस्ट बॉक्स नं० 19, मुख्य डाकघर जींद-126102

स्थापित १९८८ **दूरभाष: ९५१२८१ २४५६९०**

जीवन ज्योति मिडिल स्कूल

पाल्हावास, जिला रेवाड़ी

(स्थाई मान्यता प्राप्त)

विद्यालय की मुख्य विशेषताएँ

❑नर्सरी से पांचवीं कक्षा तक अंग्रेजी व हिन्दी माध्यम तमेहनती व कर्मठ अध्यापक गण
❑विद्यालय का निजी वाहन ❑नवोदय व सैनिक स्कूल के लिए तैयारी
❑भविष्य में सीनियर सैकेंडरी स्कूल की योजना ❑विकलांग बच्चों के लिए मुफ्त शिक्षा
❑प्रतिभाशाली बच्चों के लिए शुल्क में रियायत

(जीवन ज्योति शिक्षा समिति)

संचालक एवं प्राचार्य
श्री भारत भूषण बंसल (९९९२३३१८२७)

महर्षि दयानन्द शिक्षण केंद्र झज्जर में यज्ञ भजन प्रवचन अभिनंदन समारोह

झज्जर, महर्षि दयानन्द शिक्षण केंद्र झज्जर में यज्ञ भजन प्रवचन अभिनंदन समारोह में श्री विजय आर्य पानीपत यज्ञ के ब्रह्मा रहे तथा श्रीमती मामकौर एवं महाशय रतिराम मुख्य यजमान रहे। श्री ऋषि पाल खेड़का गुज्जर कार्यक्रम के अध्यक्ष रहे। राजकीय स्नातकोतर कॉलेज के पूर्व प्रिंसिपल डॉ० एच एस यादव ने मुख्य वक्ता के रूप में कहा कि आत्मिक बल सबसे महत्त्वपूर्ण है। आत्मिक बल निराकार ईश्वर की उपासना और उसकी आज्ञा का पालन करने से आता है। आत्मिक बल वाला मनुष्य प्रलोभन आने पर भी सत्य मार्ग से विचलित नहीं होता। प्रत्येक की उन्नति में वह अपनी उन्नति समझता है। इस अवसर पर श्री ऋषिपाल आर्य ने कहा कि ईश्वर, जीव तथा प्रकृति तीनों अनादि पदार्थ हैं। तीनों को किसी ने नहीं बनाया। ये हमेशा से थे, हैं और रहेंगे। ईश्वर प्रकृति पदार्थ से जड़ जगत् बनाता है। ईश्वर सत्य-ज्ञान और जीवों को उनके कर्मों के अनुसार फल देता है। महाशय रतिराम ने अपनी हीरक जयंती पर ६ अक्टूबर २०१९ को २५१ कुंडीय हवन महोत्सव महान लॉयन्स सिलानी गेट झज्जर में निशुल्क यजमान बनने की प्रार्थना की। आर्य समाज के प्रधान द्वारका प्रसाद, सूर्यप्रकाश, सत्यदेव, उधम सिंह, पंडित जयभगवान आर्य, चमन लाल यादव, श्री भगवानसिंह, मास्टर पन सिंह तथा अध्यापिका सुमित्रा व कांता देवी ने मधुर भजन रखें। वैदिक धर्म का संक्षिप्त परिचय कंठस्थ याद करने वाले मनस्वी, अनमोल, हर्षिता, जैसमिन, खुशी, दीप्ति आदि होनहार विद्यार्थियों को सम्मानित किया गया। (सुभाष आर्य)

माता-पिता की वैवाहिक वर्षगांठ पर रक्तदान

कोटपुतली, प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के जन्मदिवस १७ सितंबर (२०१५) से संचालित रक्तमणि अभियान के १२७० वें दिन मनीष सोनी सुपुत्र श्री नरेंद्र सोनी निवासी गंगा कालोनी कोटपुतली ने अपने माता-पिता के विवाह की २९वीं वर्षगांठ पर उनकी उपस्थिति में स्वैच्छिक रक्तदान किया। रक्तमणि संयोजक मुकेश गोयल ने कहा कि रक्तदान कोई साधारण दान ना होकर एक पुण्य दान है। इस एहसास को व्यक्ति तभी अनुभव कर सकता है यदि उसने किसी को रक्तदान किया हो। कार्यक्रम में नरेंद्र सोनी, मंजू सोनी, प्रवीण बंसल, रघबीर, अंकित गोयल, दयाराम मुक्कड़ सहित अनेक लोग मौजूद रहे। (निस)

घर बैठे

संस्कृत अध्ययन करें

उच्चारण-शुद्धि, सामान्य-संस्कृत, पाणिनीय व्याकरण (अष्टाध्यायी), दर्शन-शास्त्र
आदि विषयों की कक्षाएं इन्टरनेट (स्काइप) पर।

इच्छुक सम्पर्क करें-

आचार्य सत्यवान् आर्य,

दूरभाष एवं वट्स एप संख्या-: 9467248777

ओ३म्

प्रवेश प्रारम्भ

वैदिक कन्या गुरुकुल दबथला

पोस्ट– एत्मादपुर, निकट किला परीक्षितगढ़, जनपद– मेरठ, (उ०प्र०) पिन– 250406

सत्र प्रारम्भ 2019–2020

छात्रावास अनिवार्य

आदरणीय अभिभावकगण!

आप सभी को जानकर अति प्रसन्नता होगी कि पुण्यभूमि भारतवर्ष की क्रान्तिधरा जनपद मेरठ के महाभारतकालीन ऐतिहासिक नगर किला परीक्षितगढ़ के समीपस्थ ग्राम दबथला में कन्याओं के सर्वांगीण विकास हेतु नव निर्मित वैदिक कन्या गुरुकुल दबथला में **कक्षा 3 से कक्षा 7 तक** **1 अप्रैल से प्रवेश प्रारम्भ** हो रहें हैं।

गुरुकुल की मुख्य विशेषताएँ

- ★ NCERT पैटर्न के साथ COMPUTER आदि की आधुनिक शिक्षा।
- ★ संस्कृत व्याकरण, वेद, दर्शन, उपनिषद् आदि वैदिक शिक्षा का अनूठा संगम।
- ★ गुरुकुल परिसर में केवल संस्कृत व ENGLISH SPEAKING अनिवार्य।
- ★ प्रतिदिन वैदिक सन्ध्या–यज्ञ, योगासन के साथ अन्य खेलों का प्रशिक्षण।
- ★ सिलाई–बुनाई, कढ़ाई, पेन्टिंग आदि का विशेष प्रशिक्षण।
- ★ सुयोग्य, समर्पित, परिश्रमी एवं प्रशिक्षित शिक्षिकाओं द्वारा अध्यापन।
- ★ विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं व व्यक्तित्व विकास आधारित शिक्षण।
- ★ ऑनलाईन कक्षाओं द्वारा विभिन्न विषयों का शिक्षण।
- ★ आत्मरक्षा हेतु जूडो–कराटे, तलवार, लाठी, भाला, मलखम्ब आदि का प्रशिक्षण।
- ★ सैनिक परिवारों एवम् आर्थिक रूप से पिछड़े परिवारों की मेधावी कन्याओं के लिए आवास एवं भोजन शुल्क में विशेष छूट।

गुरुकुल संचालिका/प्राचार्या :

आचार्या सोनिया आर्या

एम.ए.संस्कृत, एम.फिल्. (स्वर्ण पदक)
एम.ए. हिन्दी, शिक्षा शास्त्र, बी.एड.

सम्पर्क सूत्र : 7409768692, 9368769326, 9412745428 | E-mail : kanyagurukuldabthla@gmail.com

ब्रह्मचारी लोकान् (पृष्ठ २१ का शेष)

केवल अपने को देखता है, अर्थात् स्वार्थी होता है, और स्वार्थ में बलिदान कैसा? बस यही कार्य आचार्य अपने ब्रह्मचारी को अपने समीप बैठाकर सिखाता है। उसके 'मैं' का विस्तार करता है। जब वह अपने शिष्य का निर्माण करके उसे समाज को, राष्ट्र को अर्पित करता है तो वह तीनों लोकों के कल्याण के लिए होता है। ब्रह्मर्षि स्वामी विरजानंद जी महाराज जानते थे कि यह ब्रह्मचारी क्या कुछ कर सकने की क्षमता रखता है। इसीलिए तो उन्होंने राष्ट्र के उत्थान के लिए उन्हें प्रेरित किया।

हम पुनः मंत्र की ओर आते हैं। मंत्र कह रहा है कि धीरे-धीरे अभ्यास से तुम बाहरी संसार से आंतरिक संसार में प्रवेश करो। पहले संसार को देखो। फिर मन पर आ जाओ। मन से आत्मा पर आ जाओ और आत्मा से परमात्मा तक की यात्रा पूर्ण करो। भूः भुवः स्वः ये लोक और कुछ नहीं, बस आपके ज्ञान का स्तर है, साधना के स्तर हैं।

भूः =पृथ्वी की स्थिति है, अर्थात् अभी तो केवल भौतिक पदार्थों में ही उलझे हो। फिर उससे ऊपर भुवः है, अर्थात् अंतरिक्ष की स्थिति अर्थात् भौतिकता से ऊपर उठकर ज्ञान-विज्ञान में पहुंच हो गई; और अंत में स्वः =द्युलोक= ईश्वर में स्थित हो गया और बस आनंद ही आनंद! अब वह ब्रह्मचारी तैयार है तीनों लोकों का पालन, पोषण करने के लिए। ऐसा व्यक्ति यदि गृहस्थ में जाएगा तो वह घर स्वर्ग! वानप्रस्थ में जाएगा तो वह स्वर्ग और यदि संन्यास में जाएगा तो पूरे विश्व को स्वर्ग बना देगा। अपने अध्ययन काल में वह कोई धन संग्रह नहीं करता। यहाँ तक कि जीवित रहने के लिए भोजन भी वह भिक्षा का मांग कर लाता है। भिक्षा का यह कार्य भी प्राचीन आचार्यों की बड़ी विचित्र देन है, क्योंकि वह लोगों द्वारा दिए गए अन्न से ही पलता है अर्थात् उसके मन में स्वाभाविक रूप से यह भावना रहती थी कि मेरे ऊपर इस राष्ट्र का ऋण है। मुझे उसको चुका कर उऋण होना है। वह भिक्षा लेने गया तो कई बहुत बड़े कार्य हो गए। पहला उसमें घमंड न रहा, दूसरे उसे अपने समाज की स्थिति का ज्ञान हो गया= लगभग प्रत्येक घर की अवस्था जान गया, तीसरा- कहीं कभी कभी अपमान भी सहना पड़ता है, अतः सहनशील बन गया।

कहाँ तो एक अबोध बच्चा पिता की उंगली पकड़कर रोता हुआ आचार्य के पास आया था और पिता भी जब उसे छोड़कर जा रहा था तो मुड़ कर देखने का भी साहस न कर पाया था कि कहीं पुत्र मोह अश्रु बनकर आंख में ना छलक पड़े। बच्चा भी पिता के जाते ही अपने को असहाय सा अनुभव कर उठा था। कहाँ आज का वह पूर्ण शिक्षित ब्रह्मचारी! अरे! उसे देखने के लिए तो पिता को भी आज अपनी ग्रीवा ऊपर करनी पड़ती है। उसकी जो स्थिति आचार्यकुल में आते समय हुई थी उससे भी अधिक विचित्र स्थिति आज आचार्यकुल से विदा होते समय हो रही है। वह सभी आश्रमवासियों से बार-बार गले मिल रहा है। भविष्य की योजनाएं बन रही हैं। लो, पाठक गण कहेंगे कि हम फिर भावनाओं में बहकर कहाँ से कहाँ आ पहुंचे हैं, अतः हम अपने इस लेख को यहीं पर विराम देते हुए शेष चिंतन उन्हीं के लिए छोड़ते हैं। ❐❐❐

योग के विघ्न (पृष्ठ २३ का शेष)

८) अलब्ध भूमिकत्त्व : योग साधना से वास्तविक स्थिति का न पाना जिससे उत्साह कम हो जाना।

९) अनवस्थितत्व : किसी भूमि में चित्त की स्थिति होने पर भी उसका ना ठहरना।

चित्त को बिगाड़ने वाले कुछ और विघ्न अर्थात् रुकावटें, जो कि योगदर्शन में वर्णित हैं-

दुःखदौर्मनस्यांगमेजयत्वश्वासप्रश्वासाविक्षेपसहभुवः।।
१-३१

इन पांच विघ्नों का वर्णन इस प्रकार है :- क) दुःख ख) दौर्मनस्य ग) अंगमेजयत्व घ) श्वास ङ) प्रश्वास

क) दुःख : आध्यात्मिक, आधिभौतिक और आधिदैविक ये तीन प्रकार के दुःख हैं। प्रथम आध्यात्मिक दुःख जो कि काम, क्रोध, घृणा, राग द्वेष आदि के कारण मन, इन्द्रिय व शरीर में पीड़ा करता है। दूसरे आधिभौतिक दुःख जो मनुष्य, पशु, पक्षी, शेर, सांप, मच्छर आदि जीवों के कारण होता है। तीसरा आधिदैविक- जो प्राकृतिक विपत्तियों के कारण पीड़ा होती है- सर्दी, गर्मी, भूकम्प, बाढ़ आदि दैवी विपदा।

ख) दौर्मनस्य :- इच्छा की पूर्ति न होने पर जो मन में क्षोभ होता है, उसे दौर्मनस्य कहते हैं।

ग) अंगमेजयत्व :- शरीर में कंपन से भी चित्त में विघ्न होता है।

घ) श्वास :- बिना इच्छा के बाहर की वायु का भीतर प्रवेश कर जाना अर्थात् बाहरी कुम्भक में विघ्न होना।

ग) प्रश्वास :- बिना इच्छा ही के भीतर की वायु का बाहर निकल जाना अर्थात् भीतरी कुम्भक में विघ्न होना।

ये विक्षेप चंचल चित्त वालों को ही होते हैं और सावधान चित्त में नहीं होते। ये पाँच विघ्न तो पहले दर्शाए नौ विघ्नों के सहायक विघ्न हैं। ❐❐❐

बिन्दु बिन्दु विचार संकलन

❒भलेराम आर्य, सांघी वाले 9416972879

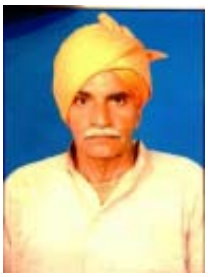

❖हम दूसरों के लिए जो अच्छा करते हैं, उसे भुला देना और याद रखना केवल उसे जो दूसरों ने हमारे प्रति किया।

❖आनन्द वह प्रसन्नता है, जिसके भोगने पर पछताना नहीं पड़ता।

❖व्यवस्था ही घर की शोभा है, सन्तुष्ट स्त्री ही घर की लक्ष्मी है, समाधान ही घर का सुख है, आतिथ्य ही घर का वैभव है, धार्मिकता ही घर का शिखर है।

❖जो अनन्त को चुन लेता है वह अनन्त द्वारा चुन लिया जाता है।

❖जो किसी को दु:ख नहीं देता और सबका भला चाहता है वह अत्यंत सुखी होता है।

❖लालच एक अदृश्य पिंजरा ही है। लालच में फंसे कि पिंजरे में कैद हो गये।

❖ सभी का कल्याण हो–यह भावना सबसे पहिले स्वयम् का ही कल्याण करती है।

❖ अपने सुरक्षित बचाव के लिये झूठ बोलोगे तो वाणी में बल कैसे रहेगा? सुरक्षा कैसी?

❖ किसी की निंदा करना तो उसे मारने के बराबर है। अत: निंदा करने के पाप में कभी न पड़ें।

❖ भगवान दूर नहीं गये हैं–लोग दूर चले गये हैं।

❖जो धर्म मनुष्य को सरल बना देता है, वह सर्वोच्च है।

❖ जहाँ मोह है वहाँ जकड़ है और जहाँ जकड़ है वहाँ व्यथा है।

❖ टकराव या झगड़ा क्या रोज–रोज होता है? यह तो जब हमारे कर्म का उदय होता है तभी होता है, उतना ही हमें एडजस्ट होना है।

शांतिधर्मी के पाठकों से निवेदन

सम्मान्य पाठकगण, यह आपके आत्मीय सहयोग से ही सम्भव हुआ है कि शांतिधर्मी नियमित प्रकाशन के २० वर्ष पूर्ण कर रहा है। हम पूरी सावधानी से हर मास सभी पते जाँच कर पत्रिका डाक में प्रेषित करते हैं। कुछ पाठकों को पत्रिका नहीं मिल पाती है। इस समस्या से हम परिचित हैं। हम डाक विभाग को सुधार नहीं सकते हैं। तथापि आपसे निवेदन करते हैं कि–

१ एक स्थान पर १० या अधिक सदस्य होने पर किसी एक सदस्य के पास पैकेट रजिस्टर्ड डाक से भेजते हैं। इसका रजिस्टरी खर्च हम वहन करते हैं। रजिस्टरी और पैकिंग सहित यह लगभग ३००/– होता है। एक सदस्य का रजिस्टरी खर्च वहन करना हमारे लिये संभव नहीं है। यदि आपको अपनी प्रति साधारण डाक से नहीं मिल रही है और आप अपनी एक प्रति रजिस्टरी से मंगाना चाहते हैं तो अपने सदस्यता शुल्क में एक वर्ष के लिए अतिरिक्त ३००/– जोड़कर भेजें। हम चाहेंगे कि आप दस वर्षीय सदस्यता शुल्क भेजने की बजाय अपने आसपास के कम से कम दस सदस्यों का वार्षिक शुल्क भेजें। आपको एक वर्ष तक हर मास १० प्रतियाँ रजिस्टर्ड डाक से प्राप्त होंगीं। यह सहयोग कुछ पाठक कर भी रहे हैं।

२ आप अपनी प्रति ई मेल से भी पीडीएफ में मंगा सकते हैं। उसके लिए कोई अतिरिक्त शुल्क देय नहीं है।

३ २००४ से पूर्व के आजीवन सदस्यों को हम निरन्तर पत्रिका भेज रहे हैं। परन्तु उनसे हमारा प्राय: कोई सम्पर्क नहीं हो पा रहा है। उन्हें पत्रिका मिल रही है या नहीं, या उनके लिये इसकी कोई उपयोगिता भी है या नहीं? इसलिये उन मान्य पाठकों से प्रार्थना है कि अपने पते की पुष्टि हमारे ईमेल, व्हाट्स एप पर या फोन द्वारा शीघ्र करने का कष्ट करें। पते की पुष्टि न होने पर हम उन्हें २१ वें वर्ष से पत्रिका नहीं भेज पायेंगे।

४ अभी वार्षिक शुल्क १२०/– तथा १०००/– दस वर्ष का शुल्क है। इसमें वृद्धि संभव है।

आशा है आपका स्नेह बना रहेगा, और हम इस कार्य को और अधिक उत्साह से कर पायेंगे।

भवदीय **सहदेव समर्पित** सम्पादक शांतिधर्मी
पोस्ट बॉक्स नम्बर 19, मुख्य डाकघर जींद–126102

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक सहदेव द्वारा प्रियंका प्रिंटर्स, जींद के लिए आचार्य प्रिंटिंग प्रैस रोहतक से छपवाकर, कार्यालय शान्तिधर्मी ७५६/३, आदर्श नगर, सुभाष चौक (पटियाला चौक), जीन्द-१२६१०२ (हरि०) से प्रकाशित। सम्पादक : सहदेव

होली पर्व पर आर्यसमाज बिठमड़ा द्वारा एक सामूहिक यज्ञ किया गया, जिसमें प्राध्यापक पवन कुमार शर्मा की विशेष भूमिका रही।

शांतिधर्मी परिसर में आयोजित समारोह में श्री जगदीश चन्द्र सिन्धु द्वारा अपने पूज्य माता-पिता की स्मृति में प्रकाशित पुस्तक वैदिक यज्ञ पद्धति का विमोचन मा० सतबीर जुलानी, मा० पृथ्वी सिंह व विनिता गुलाटी के कर कमलों से हुआ।

ग्राम बिकानेर गंगायचा अहीर में होली पर आयोजित भव्य हवन का दृश्य

कोटपुतली : अपने माता-पिता श्री नरेन्द्र सोनी व श्रीमती मंजू सोनी की २९वीं वैवाहिक वर्षगांठ पर रक्तदान करते हुए मनीष सोनी।

ओ३म्

M- 98964 12152

रवि स्वर्णकार

हमारे यहाँ सोने व चांदी के जेवरात
आर्डर पर तैयार किये जाते हैं।

प्रो. रविन्द्र कुमार आर्य

६, आर्य समाज मंदिर, रेलवे रोड़, जीन्द (हरि०)-१२६१०२

॥ ओ३म् ॥

स्वामी दयानंद सरस्वती
(आर्य समाज के संस्थापक)

शिवालिक गुरुकुल

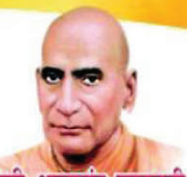

स्वामी श्रद्धानंद सरस्वती
(गुरुकुल शिक्षा के विस्तारक)

भारतीय संस्कृति के साथ आपके बच्चे का उज्ज्वल भविष्य

सी.बी.एस.ई. पाठ्यक्रम (केवल लड़कों के लिए)

प्रवेश सूचना

विद्यार्थी जीवन ज्ञान एवं शक्ति के संचय का काल है। यथार्थ ज्ञान के बिना किसी भी प्रकार के सुख की प्राप्ति कल्पना मात्र है। प्राचीन काल में बालक के चहुँमुखी विकास के लिए माता-पिता श्रेष्ठ गुरुओं के कुल (गुरुकुल) में अध्ययन के लिए प्रविष्ट कराते थे, जहाँ सम्पूर्ण विद्याओं का पठन-पाठन एक ही स्थान पर उपलब्ध होने से विद्यार्थी का सर्वांगीण विकास संभव हो पाता था। कुछ शिथिलताओं के चलते कालान्तर में इसका स्वरूप परिवर्तित होता गया। वर्तमान काल में भी यदि हम अपने बच्चों का एक ही स्थल पर सम्पूर्ण विकास करना चाहते हैं, तो वह राष्ट्रीय गुरुकुल शिक्षा प्रणाली से ही संभव है। इस चिन्तन को साकार रूप देने के लिए शिवालिक शिक्षण संस्थान समूह ने ऋषियों की इस प्राचीन प्रणाली को आधुनिक शिक्षा के साथ सुरक्षा, संस्कार और सेवा इन चार उद्देश्यों को सुनियोजित कर राष्ट्र व छात्रों की सर्वोन्नति के लिए शिवालिक गुरुकुल (Shivalik Gurukul) का संचालन किया जा रहा है।

प्राचार्य : शिवालिक गुरुकुल

FEATURES

- Ultra Modern Fully Airconditioned Hostel with Stern supervision by wardens & CCTV (24x7)
- Horse Riding, Skating & Gun Shooting • Separate Coach for Games • Campus in 16 Acres
- Special Focus on Moral Values • Experienced & Dedicated Staff • Lush Green Play Ground.

Vill. Aliyaspur, P.O. Sarawan, Mullana, Ambala (Haryana) • **E-mail :** shivalikgurukul.ambala@gmail.com
Admission Helpline : 9671228002, 8813061212, 8901140225 • **Website :** www.shivalikgurukul.com